प्रीत के गीत

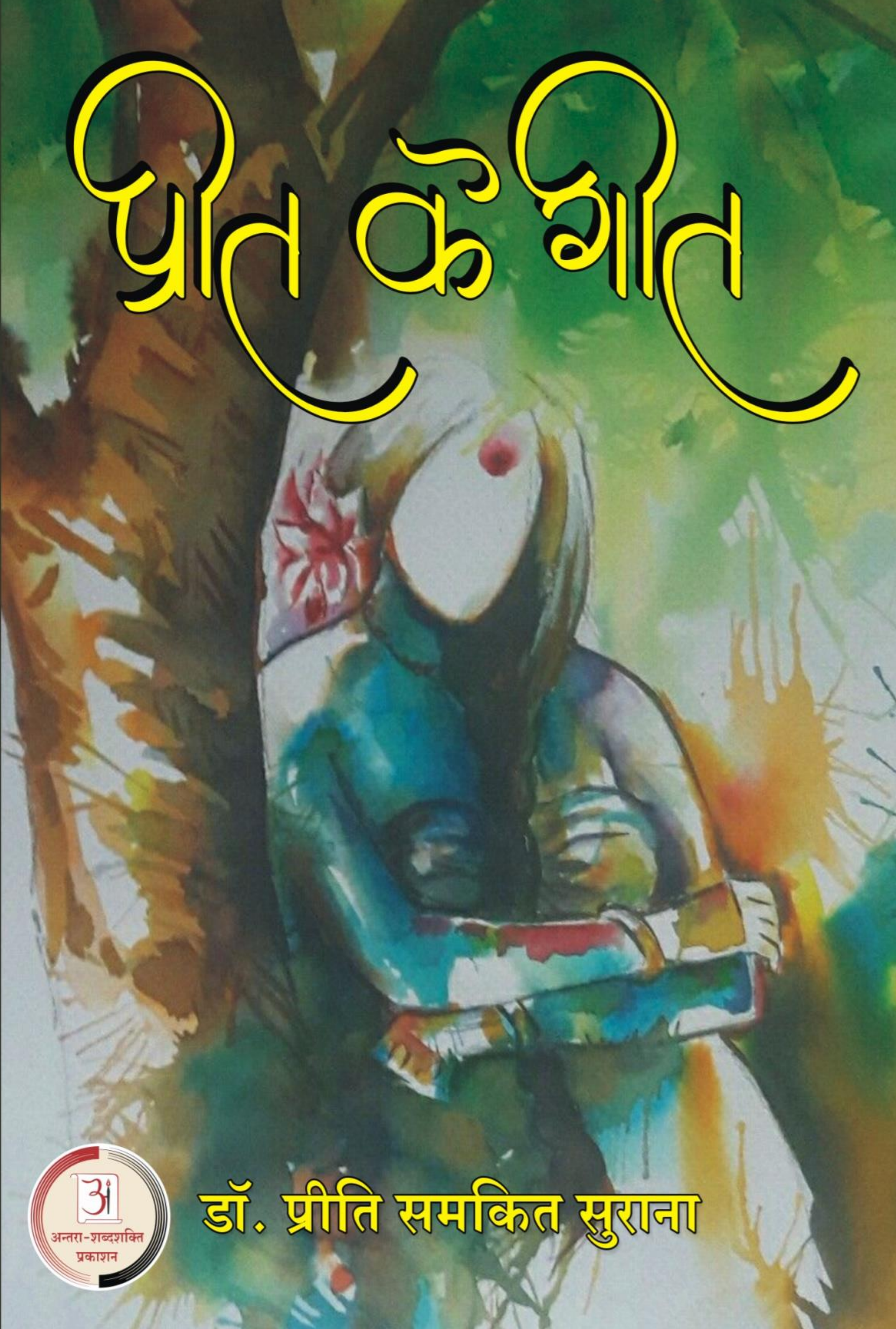

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

प्रीत के गीत

प्रीत के गीत

(गीत संग्रह)

डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-252-4
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**
वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**
प्रथम संस्करण- 2020, डॉ. प्रीति समकित सुराना
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY DR. PRITEE SAMKIT SURANA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रीत के गीत की गूँज

अक्षर ब्रह्म है। शब्दों में समाहित अक्षर-समूह जीवन रचना का आधार है। अक्षर ही अभिव्यक्ति है और बाह्य-अन्तर अभिव्यक्ति ही अध्ययन-अनुभव, चरित्र और संस्कार की परिचायक है। शब्द लालित्य, मधुरता और पावित्र्य सहेज कर रखना और भावनात्मक सम्बन्धों को अपनी रचनाओं में जीवित रखना एक कवि की नैतिक जिम्मेदारी है।

उदयभानु हंस कहते हैं कि-

"वह शक्ति है कवि की कलम में जिससे इस धरती को वह स्वर्ग बना सकता है!"

मन की गहरी झील में भाव हों और दृष्टि में सपने सजाने और पूरा करने की क्षमता, तो समूची कायनात स्थितियाँ पैदा करने का कारण बन ही जाती है, परन्तु किसी निर्झर की महीन ध्वनि मन के गहन अरण्य के एकान्त में तब तक सुनाई नहीं देती है, जब तक हम अपने मन के कोलाहल से स्वयं किनारा न कर लें। लवणयुक्त जिह्वा से मिश्री की मिठास कभी अनुभव नहीं की जा सकती।

प्रीति सुराना न केवल एक कवयित्री, लेखिका व सम्पादिका हैं, वरन् एक समाज सेविका भी हैं। गौशाला को मात्र शब्दों से ही बयां नहीं करतीं बल्कि सेवा और सुश्रूषा भी करती हैं। "औरत जब तक भी रहती है"- यह उनके रक्त में प्रवाहित वह विषय है, जिसने अनगिनत महिलाओं को लेखन से जोड़ा है। छोटी-छोटी खुशियों को जीने का प्रोत्साहन दिया है।

प्रीति सुराना एक आवाज है, जो संगठन की शक्ति बन जाती है। अपने आपको पहचानने का हुनर सिखाती है, अपना और अपनी भाषा हिन्दी का सम्मान करना सिखाती है, परन्तु हिन्दी पर होने वाली भाषायी और राजनैतिक नाइंसाफी से द्रवित हो प्रीति सुराना इस अत्याचार और अतिक्रमण से भीतर तक कहीं टूट सी जाती हैं।

मन को संभालते हुए, भावों को कलमबद्ध करते हुए, कवयित्री की काव्यगत उपमाएँ पार्थिव सौंदर्य की कल्पनाओं और अलंकारों में यथार्थ गढ़ती हैं। पर्वत, बादल, आसमां, पेड़ और धूप की परछाइयाँ उनके काव्य रूपी जल में उतर अठखेलियाँ करती हैं। प्रतिपल पाठकों के इर्द-गिर्द मृदु तरंगों का एहसास लिए उनके विषय अदृश्य रूप से मन को स्पर्श कर जाते है।

कहते हैं कि-

मन यदि कुबेर हो जाए तो कनक राशि हर आँगन में बरस सकती है। यही सुवर्ण राशि बरसी है- प्रीति सुराना की नव कृति "प्रीत के गीत" के आँगन में लगभग 90 कविताओं की अविरत झड़ी बन।

कवयित्री की लेखन के प्रति आसक्ति सर्वश्रुत है। उनके चिन्तन की परिधि में मृदा, पृथा, अम्बर, बूँद, बदली, समन्दर जैसे नैसर्गिक विषय और अश्क, सिसकी, मौन, अन्तस, दर्द जैसे करुणरस से ओतप्रोत विषयों की महक समायी रहती है, जो जरा, व्याधि इत्यादि को परे झटक कर अपनी खुशबू बिखेरती रहती है। आशा जब एक पल कभी निराशा की स्थिति भी उत्पन्न करती है, तो कवयित्री को लगता है कि "कुछ तो टूट रहा है अंदर", कभी सोचती है "दर्द की बदलियाँ हैं, गीत कैसे लिखूँ", मानो "लिख रही

हूँ एक तराना" कहकर वह "अम्बर की अलगनी" पर "आँखों के नीर" को टाँग देना चाहती हैं।

घोर पूर्वाग्रहों और आत्ममुग्धता की गुंजलक में फंसे इस दौर में प्रीति सुराना द्वारा लिखी गई कविताओं के विषय में कहना होगा कि इन कविताओं के पठन पाठन से आरोहमान मानदण्डों तक पहुँचने की लालसा के तहत कवयित्री ने कविता की सुनहरी देहरी पर पाँव रखे हैं।

प्रीति सुराना अपने लिए साहित्य रूपी भास्कर से उष्मा पाती हैं। वे लेखन में इस कदर डूबी हुई हैं कि कलम और स्याही के बिना उनके प्राण प्रफुल्लित नहीं होते। वह कभी कहती हैं कि "अच्छे दिन आने तो दो" तो कभी खुद को आईने में देख कहती हैं "अच्छे दिन खुद क्यूँ नहीं लाते", कभी "चिन्ताएँ ही शेष रहीं" आज के भागम-भाग के समय में पेशानी पर अपने अक्स छोड़ जाती है।

"प्रीत के गीत" में विषय बाहुल्य है। जिन पाठकों को ईश्वरीय वरदहस्त की मुमुक्षा है, उनके लिये "प्रभु थामो मेरी पतवार" जैसी कविता में प्रीति सुराना ने स्वयं को मानो भगवान को सौंप दिया है। "गणपति वंदना" में भगवान गणेश के एक सौ आठ नामों का स्मरण करते हुए उन्होंने अलख जगाई है।

पीड़ा की पराकाष्ठा को महसूस करते हुए कवयित्री प्रीति सुराना द्वारा लिखित कविताएँ हर दिल से होकर गुजरती हैं। सर्वकालव्यापी समसामयिक काव्य अपनी छाप छोड़ते हैं- "भीग रहा है अन्तस मेरा", "गीत कैसे लिखूँ", "तबियत खराब सी है, खुशी नाराज़ सी है", "दर्द की बदलियाँ हैं" जैसे अनगिनत शीर्षक पाठकीय ऐषणा को, विशेष रूप से स्त्री विमर्श को झिंझोड़ कर, एक पल को साँसों की गति तेज़ करके भावनाओं को आकण्ठ कर जाते हैं।

काव्य संग्रह ने मंजुल नाद उत्पन्न कर, मन के गलियारों में रस घोला है, जिसमें कवयित्री ने सहज, स्वाभाविक, प्रतिमान रचे हैं। उनके इस प्रयास का सर्वत्र स्वागत ही होगा।

मानव मन को गूँथने के लिये जिस डोर और सूचिका की जरूरत है, जो प्रवाह अभिलषित है, वही कवयित्री के उद्गार हैं। कहा जा सकता है कि-

आसमां कागद हो और किरणें सुनहरी स्याही, तो जो भी लिखा जाएगा अप्रतिम ही होगा।

इन कविताओं को महज कल्पना-प्रसूत व पीड़ा-जनित ही नहीं कहा जा सकता, अपितु वे मन के भाव-तन्तुओं को प्रियतर कंपन देती हैं। विद्वज्जनों के मध्य इस नव कृति का हार्दिक स्वागत होगा। काव्यात्मक उद्गार और रसमयता के संगम पर अधिष्ठित ये "प्रीत के गीत" पाठकों का अविरत स्नेह सम्पादित करेंगे, अपनी गूँज को धरा से लेकर अम्बर तक पहुँचाने में सक्षम होंगे, इसी विश्वास के साथ...

डॉ. प्रीति समकित सुराना को अनन्त शुभकामनाएँ।

रंजना श्रीवास्तव
(कवयित्री/लेखिका)
नागपुर - 440034
मो. 9096808191

अनुक्रमणिका

1.	प्रभु थामो मेरी पतवार	11
2.	गणपति वंदना	12
3.	ॐ ह्रीँ श्री जिनदत्त मणिधारी जिनकुशल जिनचंद सूरिभ्यो नमः	14
4.	अभिनन्दन अतिथि का	15
5.	जय जय हिन्दी माता महान	16
6.	गीत लिखूं	17
7.	लिख रही हूं इक तराना	18
8.	औरत जब तक भी रहती है	19
9.	गौ मां	20
10.	उफ़ गरमी	21
11.	उफ़ गरमी	22
12.	आज एक बिरवा रोंपा है,..	23
13.	पिटारा	24
14.	मेरी सांसों की है सरगम	25
15.	सुधियों का विलाप	26
16.	तू मत रोया कर	27
17.	पीड़ा का एक गहन समंदर	28
18.	कितनी मैं मजबूर हूँ,..।	29
19.	आंखों के नीर	30
20.	दस्तक दे रहा है दर्द	31
21.	साजिशों से बचती हूं	32
22.	कुछ अच्छा ही होगा कल	33
23.	दर्द परख ले	34

24. मन का मीत 35
25. तू मेरा और बस मेरा है 36
26. खुशी की कड़ी 37
27. सब साथी हैं मतलब के 38
28. पीड़ा इतनी गहन हुई 39
29. दर्द समंदर जितना गहरा 40
30. कहता मन मेरा 41
31. भावों की सरिता 42
32. कुछ सपने अंधियारो में 43
33. जीना है तो जीना है 44
34. खुशियों ने की ताकाझांकी 45
35. अच्छे दिन तो आने दो 46
36. चाह मिलन की 47
37. नश्तर 48
38. दर्पण 49
39. दो जून की रोटी 50
40. 'मैं' का बंधन 51
41. भारत की भाषा हिंदी हो 52
42. पीर बहुत है,.. 53
43. कुछ तो टूट रहा है अंदर 54
44. सारे ही भाव अधूरे हैं 55
45. ये कैसे डेरे हैं मन के 56
46. तोड़ रही हूं नाते सबसे 57
47. आंसू बन,.. 58
48. मुश्किल जब-जब भी आती है 59
49. आशा का इक दीप 60

50.	सिसक सिसक कर रातें रोई	**61**
51.	एकाकीपन	**62**
52.	रे मन पीड़ा को बहने दे	**63**
53.	मैं बहुत पीड़ा में हूँ	**64**
54.	पीड़ा तो मेरी सखी है पुरानी	**65**
55.	भीग रहा है अन्तस मेरा	**66**
56.	मेरा ये पागलपन	**67**
57.	कोई हल न मेरे पास है	**68**
58.	मुझसे मेरे मन का नाता	**69**
59.	एक नई सी रीत	**70**
60.	दर्द की बदलियाँ है, गीत कैसे लिखूँ,.....!	**71**
61.	रोना क्यों?	**72**
62.	कविता फूट-फूट कर रोई!	**73**
63.	मन के भीतर बैठ जुलाहा	**74**
64.	नव्यबोध	**75**
65.	मैं प्रीत के गीत का हूँ अन्तरा	**76**
66.	एकाकी	**77**
67.	ये आंखें बोल जाती है	**78**
68.	अपने दर्द सारे	**79**
69.	अम्बर की अलगनी	**80**
70.	कर ज़रा सा सब्र मेरे मन	**81**
71.	लिखते हैं, मिटाते हैं!	**82**
72.	अरमान अधूरे रह गए	**83**
73.	क्या आदमी इतना बड़ा होगा?	**84**
74.	तुमको देखे हुए	**85**
75.	पीपल सुन रे!	**86**

76.	किसे पुकारें आज हम	**88**
77.	मुझमें तू बसता है आधा	**89**
78.	तबियत खराब सी है, खुशी नाराज़ सी है	**90**
79.	राम का मंदिर	**91**
80.	नहीं जाते	**92**
81.	अच्छा लगता है	**93**
82.	चिंताएँ ही शेष रही	**94**
83.	अमवा की छांव में	**95**
84.	गोकुल-वृंदावन-बरसाना-मथुरा	**97**
85.	पैरों की पायल	**98**
86.	मन आँगन	**99**
87.	अच्छे दिन खुद क्यूं नहीं लाते	**100**
88.	धूप का टुकड़ा	**102**
89.	मन करता मनमानी, बात मेरी न मानी	**104**

प्रभु थामो मेरी पतवार

गहरी धारा,.. दूर किनारा,... प्रभु थामो मेरी पतवार,...

वीर ये तो है माया नगरी,.
यहां है बस छल और माया,..
झूठे सपनों, झूठे खेलो में ही,.
मानव मन तो है भरमाया,..
पर डर कैसा तुम हो माझी,..
हम हो जाएंगे भवपार,..
गहरी धारा,.. दूर किनारा,...प्रभु थामो मेरी पतवार,...

मानव ने कभी भी सृष्टि में,.
अपनी लघुता को न माना,..
मन बावरा पंछी चातक सा,
चांद को ही अपना जाना,..
बस झूठी तृष्णा की लहरें,...
काटो वीर मोह की धार,..
गहरी धारा,.. दूर किनारा,...प्रभु थामो मेरी पतवार,...

अंगारों पर नीड़ बनाकर,.
जीते हैं बस भ्रम पाले,..
फूलों के धोखे में जाने हमने,.
कितने कांटे चुन डाले,.
मोह भ्रमर मंडराए जीवन में,...
लो वीर हमें अब तार,..
गहरी धारा,.. दूर किनारा,...प्रभु थामो मेरी पतवार,...!

गणपति वंदना

हे! प्रथमेश्वर, भालचन्द्र, बुद्धिनाथ, धूम्रवर्ण,
एकाक्षर, एकदन्त, गजानन, गजकर्ण,
गजनान, गजवक्र, गजवक्त्र, गणाध्यक्ष,
गौरीसुत, लम्बोदर, लम्बकर्ण, बालगणपति,
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

निदीश्वरम, शूपकर्ण, वक्रतुण्ड, शुभम,
पुरुष,सिद्धिदाता, सिद्दिविनायक, सुरेश्वरम,
महाबल, महेश्वर, मंगलमूर्त्ति, मूषकवाहन,
अखूरथ, अलम्पता, अमित, महागणपति,
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

अवनीश, अविघ्न, भीम, अनन्तचिदरुपम,
बुद्धिनाथ, बुद्धिप्रिय, बुद्धिविधाता, मूढ़ाकरम,
चतुर्भुज, देवादेव, देवांतकनाशकारी, दूर्जा,
देवव्रत, देवेन्द्राशिक, धार्मिक, भुवनपति,
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

गदाधर, द्वैमातुर, एकदंष्ट्र, ईशानपुत्र,
गणाध्यक्षिण, गुणिन, हरिद्र, उमापुत्र
कपिल, कवीश, कीर्त्ति, हेरम्ब,
कृपाकर, कृष्णपिंगाश, क्षेमंकरी, भूपति,
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

मनोमय, मृत्युंजय, मुक्तिदायी,सर्वदेवात्मन,
नादप्रतिष्ठित, नमस्थेतु, नन्दन, सर्वात्मन,
सिद्धांथ, क्षिप्रा, सर्वसिद्धांत, ओमकार,
शशिवर्णम, शुभगुणकानन, श्वेता, वरगणपति,
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

पीताम्बर, प्रमोद, रक्त, रुद्रप्रिय,
स्कन्दपूर्वज, सुमुख, स्वरुप, सिद्धिप्रिय,
तरुण, उद्दण्ड, वरप्रद, वरदविनायक,
विद्यावारिधि, विघ्नहर, विघ्नहर्त्ता, वीरगणपति,
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

विकट, विश्वमुख, विघ्नराजेन्द्र, विघ्नविनाशाय,
विघ्नेश्वर, विघ्नविनाशक, विनायक, यज्ञकाय,
विश्वराजा, यशस्कर, योगाधिप, यशस्विन,
नाम एक सौ आठ स्मरण किये "गणपति",
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

जीवन भर जीव ने पाप पुण्य खूब किये,
कर्म किये अनुकूल प्रतिफल भूलकर,
भूल चूक माफ करो, मेरा मन साफ करो,
राह दिखाओ जिसमें हो स्मृति से विस्मृति,
हाथ जोड़ विनती है अति की करो इति।
विपदा संताप हरो सुधारो जीवन की गति।।

****

ॐ ह्रीँ श्री जिनदत्त मणिधारी जिनकुशल जिनचंद सूरिभ्यो नमः

हम हैं छोटे छोटे बच्चे और आप हमारे दादो सा,
करें प्रार्थना छोटी सी करो स्वीकार ओ दादो सा,

मम्मी कहती है आप करते है बड़े ही चमत्कार,
एक बार दर्शन देकर हम पे भी कर दो उपकार
और नहीं कुछ मांगेंगे हम बस आप अपनी छवि दिखा दो,
बस एक बार घर आ जाओ ना हमें दर्शन दे दो दादो सा,..
हम हैं छोटे छोटे बच्चे और आप हमारे दादो सा,
करें प्रार्थना छोटी सी करो स्वीकार ओ दादो सा,..।।

डूबती जहाज भक्त की तारी और टूटी नाव नई कर डाली,
अंधों की आँखे खोली और गूंगो को दे दी बोली
हमने तो सबकुछ पाया है भरी हुई है पूरी झोली,
बस एक बार घर आ जाओ ना हमें दर्शन दे दो दादो सा,..
हम हैं छोटे छोटे बच्चे और आप हमारे दादो सा,
करें प्रार्थना छोटी सी करो स्वीकार ओ दादो सा,..।।

अकबर को अभक्ष छुड़ाया और अमावस को चाँद उगाया,
भूखों को भोजन भी खिलाया बिन मौसम पानी बरसाया,
हमको बस सत्कर्म सीखा दो और भला इंसान बना दो,
बस एक बार घर आ जाओ ना हमें दर्शन दे दो दादो सा,..
हम हैं छोटे छोटे बच्चे और आप हमारे दादो सा,
करें प्रार्थना छोटी सी करो स्वीकार ओ दादो सा,...।।

****

अभिनन्दन अतिथि का

मैं करती अभिनन्दन अतिथि का,
पर ज्ञान नहीं मुझको विधि का,..।

राह पर यदि सुमन रखती हूं,
कांटे चुभने से डरती हूं।
कांटा न रहे व सुन्दर भी हो,
सुमन वही जो सुरभित भी हो।
ढूंढूं खोल पिटारा सुधि का,
मैं करती अभिनन्दन अतिथि का।

पर ज्ञान नहीं मुझको विधि का,..

कुमकुम का मैं तिलक लगाती,
अक्षत चन्दन माला भी लाती।
वीणा का करवाती वादन ,
करती अंतर्मन से अभिवादन।
थाल अर्पित भावों की निधि का,
मैं करती अभिनन्दन अतिथि का।

पर ज्ञान नहीं मुझको विधि का,..

****

जय जय हिन्दी माता महान

सिंधु में जितना भी है जल, हिन्दी में उतना है ज्ञान!
जय जय हिन्दी माता महान, जय जय हिन्दी माता महान!

ऐसी है हिन्दी की माया
शब्द शब्द में ब्रम्ह समाया
बीज मंत्र से लेकर देखो
सृष्टि का हर वर्ण बनाया
सुर से लेकर स्वर तक जिसने, पाया है वरदान,
जय जय हिन्दी माता महान, जय जय हिन्दी माता महान!

शुभ्रा के वीणा की धुन
चपला सी चंचला के गुण
माता सती सी सहनशीलता
भारत माँ जैसी है करुण
हर बोली को अपनाया, जो है गुणों की खान,
जय जय हिन्दी माता महान, जय जय हिन्दी माता महान!

दवात लेखनी पत्रक धारे
अस्त्र शस्त्र है अक्षर सारे
रचती कितनी वेद ऋचाएं
सम्पदा जिसकी सभी विधाएं
प्रीति साधे जो सकल संस्कृति, साधन और संधान!
जय जय हिन्दी माता महान, जय जय हिन्दी माता महान!
सिंधु में जितना भी है जल, हिन्दी में उतना है ज्ञान!
जय जय हिन्दी माता महान, जय जय हिन्दी माता महान!

****

गीत लिखूं

मेरे दिल में इक चाहत है,
आज नया सा गीत लिखूं।
मुखड़े में लिख नाम तुम्हारा,
बन्द-बन्द मनमीत लिखूं।।

रोज गली में छुपकर आना,
मेरी एक झलक की खातिर,
देख तुझे मेरा छुप जाना,
तुझको तकना धीरे से फिर,
आखिर नजरों के मिलने को,
हार लिखूं या जीत लिखूं,
मुखड़े में लिख नाम तुम्हारा,
बन्द-बन्द मनमीत लिखूं।।

नजरों के यूंही मिलने से,
दिल ने दिल से नाता जोड़ा,
लाख मनाया मैंने दिल को,
फिर भी सीमाओं को तोड़ा,
दिल से दिल ही जोड़ लिए तो,
प्रीति भरी यह रीत लिखूं,
मुखड़े में लिख नाम तुम्हारा,
बन्द-बन्द मनमीत लिखूं।।

****

लिख रही हूं इक तराना

लिख रही हूं इक तराना प्यार का
याद आया साथ मुझको यार का

न उठती थी पलक भी दीदार को
तरसती थी देखकर दीवार को
फिर इक संदेशा मिला इकरार का, लिख रही हूं इक तराना....

धड़कनों ने एक लय को था चुना
यूं धड़कना तो न पहले था सुना
फिर छिड़ा था गीत वो इजहार का, लिख रही हूं इक तराना,...

प्रेम के परिंदे बनाकर घोसला
बस गए थे तब वहां कर हौसला
सह सके न दर्द वक्त की मार का, लिख रही हूं इक तराना...

सूरज नही बन सका कुछ तो नही
दीप सा भी वो जला पल दो नहीं
फिर दिखा ही क्यूं उजाला प्यार का, लिख रही हूं इक तराना,..

आज तो बस पीर ही भीतर रही
सोच दोनों की जुदा होकर रही
फिर हुआ था फैसला इक हार का, लिख रही हूं इक तराना,..

****

औरत जब तक भी रहती है

पीड़ा जीवन भर सहती है,
औरत जब तक भी रहती है,..

औरत जब पैदा होती है, तब से मरने तक रोती है।
ये आंसू नियति रही सर्वथा, जीवन ही सारा व्यर्थ अन्यथा।
मां के आंचल में खिलती है, पीड़ा जीवन भर सहती है।
औरत जब तक भी रहती है,..

पलती है बाबुल के घर में, परिणय तक रहती पीहर में।
छूटे बाबुल का आंगन पर, कब होता कोई अपना घर।
साजन के संग भी चलती है, पीड़ा जीवन भर सहती है।
औरत जब तक भी रहती है,..

कोख रचे इक नवजीवन को, समझे कोई नारी मन को।
कितनी टीस उठाई होगी, बेटी गर्भ में आई होगी।
दुनिया ताने देती रहती है, पीड़ा जीवन भर सहती है।
औरत जब तक भी रहती है,..

मां के सारे कर्तव्य निभाती, ममता अपनी खूब लुटाती।
बेटा बेटी एक सरीखे, कोई मां से ये भी सीखे।
कोई भेद न वो करती है, पीड़ा जीवन भर सहती है।
औरत जब तक भी रहती है,..

बचपन में बाबुल का घर था, ब्याह हुआ साजन का दर था।
जनमी औलादें जिस आंगन में, हक़ न वहां पाया जीवन में।
बूढ़ी मां भारी लगती है, पीड़ा जीवन भर सहती है।
औरत जब तक भी रहती है,..

****

गौ मां

गोकुल कान्हा का धाम न होता।
जग में गौ मां का नाम न होता,..

अमृत मंथन से निकली गौ माते,
धर्मशास्त्र हैं यह बात बताते।
पूजी जाती है गाय युगों से,
संस्कृति यही भारत की सदियों से।
धर्म में भी ऐसा काम न होता,
गोकुल कान्हा का धाम न होता, जग में गौ मां का नाम,..

दूध दही घी माखन खाते हैं,
गोबर से आंगन लिपवाते हैं।
गौमूत्रजनित बनती औषधियां,
गोधन से सजती कृषि की दुनियां।
गोलोचन का भी काम न होता,
गोकुल कान्हा का धाम न होता, जग में गौ मां का नाम,..

मूक हमारी गौ मां रहती है,
जाने पीड़ा कैसे सहती है
पैसे की खातिर काटी जाती,
कितने टुकड़ों में बांटी जाती।
पशुधन का कोई दाम न होता,
गोकुल कान्हा का धाम न होता, जग में गौ मां का नाम,..

आओ हम सब प्रण यह अब धारें,
गौवध रोकेंगे मिलकर सारे ।
मजहब में दुनिया को क्यूं बांटे,
दोषी वो जो गौ मां को काटें।
बदनाम खुदा या राम न होता,
गोकुल कान्हा का धाम न होता, जग में गौ मां का नाम,..

****

उफ़ गरमी

कोई तो सूरज से पूछे, कैसे सहता है गरमी।
तपती धरती देखी सबने, बोल रहे सब उफ़ गरमी।

रोज सुबह सबसे पहले उठ, सूरज खुद जल जाता है।
जलकर खुद ही इस दुनिया को, रोशन वो कर पाता है।
पाकर उजियारा भी शिकवा, रोज कहें सब उफ़ गरमी।
कोई तो सूरज से पूछे, कैसे सहता है गरमी।
तपती धरती देखी सबने, बोल रहे सब,..।

धरती के सब आंसू पीकर, बादल में छुप जाता है।
बादल बारिश बन दुनिया को, तब राहत पहुंचाता है।
करते तारीफें बादल की, भूल गए तब वो गरमी।
कोई तो सूरज से पूछे, कैसे सहता है गरमी।
तपती धरती देखी सबने, बोल रहे सब,..।

तन मन अन्न धन हो या जीवन, सूरज पर आश्रित होता।
पर मानव की आदत ही है, बात बात पर है रोता।
इक दिन भी प्रकृति संचालित हो, संभव नहीं है बिन गरमी।
कोई तो सूरज से पूछे, कैसे सहता है गरमी।
तपती धरती देखी सबने, बोल रहे सब,..।

****

उफ़ गरमी

तुमसे आया न गया, हमसे बुलाया न गया
फासला प्यार में दोनो से मिटाया न गया ।

यूं तो आदत रही है हमें तनहा जीने की,
घुट घुट कर अपने ही आंसू के पीने की,
तुझसे भी तो साथ मेरा निभाया न गया,
फासला प्यार में दोनों से मिटाया न गया,
तुमसे आया न गया,...

बाद मुद्दत के आज खोले मन के द्वार,
आज भी चलो मैंने मान ली तुमसे हार,
अपना हाल ए दिल तुमसे बताया न गया
फासला प्यार में दोनों से मिटाया न गया
तुमसे आया न गया,...

खैर छोड़ो अब ये जिरह की सारी बातें
काट लूंगी मैं साथ रहकर भी तनहा रातें
हक़ से रूठी रही मैं तुमसे मनाया न गया
फासला प्यार में दोनों से मिटाया न गया
तुमसे आया न गया,...

****

आज एक बिरवा रोंपा है,..

आज एक बिरवा रोंपा है मैंने मन के आंगन में।
सोचा है फिर रंग भरुंगी सूने से इस जीवन में।

दूर दूर तक देखा जाकर, हरियाली का नाम नहीं है,
खिली खिली सी रंगत वाली, कोई सुनहरी शाम नहीं है,
सोचा है फिर से पहनूंगी सातो रंग मैं कंगन में।
आज एक बिरवा रोंपा है मैंने मन के आंगन में।
सोचा है फिर रंग भरुंगी सूने से इस जीवन में।

पंछी का कलरव होता था, शाम ढले पनघट के तट पर
छमछम बरखा की बूंदें, बरसा करती थी छत पर
सोचा है फिर से भीगूंगी अब की बार मैं सावन में।
आज एक बिरवा रोंपा है मैंने मन के आंगन में।
सोचा है फिर रंग भरुंगी सूने से इस जीवन में।

बड़े बड़े से महल खड़े है, जहां आम के पेड़ खड़े थे
याद कहां रहता था बातों में, कौन थे छोटे कौन बड़े थे
सोचा है फिर खेलूंगी गुड़िया मैं सखियों के संग में।
आज एक बिरवा रोंपा है मैंने मन के आंगन में।
सोचा है फिर रंग भरुंगी सूने से इस जीवन में।

मंदिर की घंटी को सुन कर, सब भागे भागे आते थे
अंजुरी में पंचामृत पीकर, चन्दन का तिलक लगाते थे
सोचा है फिर से केसर का रंग भरुंगी चन्दन में।
आज एक बिरवा रोंपा है मैंने मन के आंगन में।
सोचा है फिर रंग भरुंगी सूने से इस जीवन में।

****

पिटारा

है अल्फ़ाज़ों का एक खजाना मेरे पास
और ख्वाबों का एक पिटारा तेरे पास।

एक ख्वाब हम रोज चुनेंगे जीने को
धड़काएंगे गीतों की धुन पर सीने को
अहसासों की सरगम भी है मेरे पास
और ख्वाबों का एक पिटारा तेरे पास।

है अल्फ़ाज़ों का एक खजाना मेरे पास
और ख्वाबों का एक पिटारा तेरे पास।

एहसासों को ख्वाबों में गूंथ करीने से
खूब सजाएंगे फिर यादों के नगीने से
प्रीत निभाने का जिम्मा है मेरे पास
और ख्वाबों का एक पिटारा तेरे पास।

है अल्फ़ाज़ों का एक खजाना मेरे पास
और ख्वाबों का एक पिटारा तेरे पास।,...

****

मेरी सांसों की है सरगम

तेरे गीतों की लय में बंधी, मेरी सांसों की है सरगम,
तू ही है हमराज़ मेरा, तू ही है मेरा हमदम।

तेरे हाथों में था हाथ मेरा
जीवन एक पल को था ठहरा
कुछ बोली अबोली बातों का
हुआ है मन पर असर गहरा
उन बातों के कर लेखे जोखे
कितनी खुशियां थे कितने गम, तेरे गीतों की लय में बंधी,...

जब तू मुझको छोड़ गया
न शाम हुई न रात ढली
न नींद रही न कोई सपना
रही सूनी यादों की गली
कठिन था बहुत ही समझाना
विचलित था विरहन का मन, तेरे गीतों की लय में बंधी,...

बीते लम्हों की बात न कर
जो छूट गया उसे याद न कर
पल पल जो हमने साथ जीया
हर पल को कर दे तू अमर
लिख दे कोई ऐसा गीत नया
कर दें सबकी आंखें जो नम, तेरे गीतों की लय में बंधी,...

****

सुधियों का विलाप

मेरी सुधियों का विलाप सुनो
मन खाली खाली लगता है,..

जब सब बिखरा बिखरा सा था
मैंने सबको खूब संभाला
जिसने मुझसे जो भी मांगा
बिन सोचे सबकुछ दे डाला
आज नहीं कुछ पास मेरे
बिन अपनों के यूं लगता है
मेरी सुधियों का विलाप सुनो, मन खाली खाली लगता है,..

पलपल सबकी खुशियों का
जरिया मैं बनती ही रही
सबके दिल का हाल सुना
अपने दिल की कभी न कही
आज जो कह न पाई मन की
कोई गुबार उठेगा लगता है
मेरी सुधियों का विलाप सुनो, मन खाली खाली लगता है,...

खैर छोड़ो अब जाने भी दो
जिसका जो था वो ले गया
कैसे कह दूं मतलबी सबको
मतलब से ही है रिश्तों का जहां
बिन मतलब के रिश्ते केवल

किताबों में रहते हैं लगता है
मेरी सुधियों का विलाप सुनो, मन खाली खाली लगता है,....

****

तू मत रोया कर

बात-बात में पलकें अपनी, नहीं भिगोया कर।
छोटी-छोटी बातों में 'मन', तू मत रोया कर।

माना सर्वस्व दिया है तूने, जीवन में अपनों को,
रिश्तों की खातिर खोया है, तूने कुछ सपनों को,
सोच जरा क्या तुझको, कोई भी सुख मिला नहीं,
कोई धूप का टुकड़ा क्या, तेरे आंगन में खिला नहीं,
करके याद हमेशा दुख ही, सुख मत खोया कर,
छोटी-छोटी बातों में 'मन', तू मत रोया कर।

है लोग बहुत दुनिया में ऐसे, जिनको कुछ भी नहीं मिला,
लेकिन हंसते ही रहते वो, जीवन से उनको नहीं गिला,
तुम्हे भूख नहीं लगती पर, रोटी को कोई तरसता है,
धरती पर जब सूखा पड़ता है, आंखों से मेह बरसता है,
अपनों के बीच में रहकर भी, तनहाई मत ढोया कर,
छोटी-छोटी बातों में 'मन', तू मत रोया कर।

अकसर सुनते आए हैं हम, जो बोएंगे वो काटेंगे,
जो भी होगा पास हमारे, वो ही दुनिया को बाटेंगे,
कर्मग्रंथ कहते हैं ये, हर कर्म का फल मिल जाता है,
सबका अलग-अलग ही होता, अपने कर्मों का खाता है,
अपने कर्मों से किस्मत में, दुख मत बोया कर,
छोटी-छोटी बातों में 'मन', तू मत रोया कर।

बात-बात में पलकें अपनी, नहीं भिगोया कर।
छोटी-छोटी बातों में 'मन', तू मत रोया कर।

****

पीड़ा का एक गहन समंदर

पीड़ा का एक गहन समंदर,
पलता है इस मन के अंदर,..

बाहर से लगता है जैसे
कितनी खुशियों का मेला है,
पर जीने वाले जाने हैं
हर कदम पर नया झमेला है,
जीते हैं रोकर या हंसकर
पीड़ा का एक गहन समंदर, पलता है इस मन के अंदर,...

पीर पराई पर हंसते हैं
अपनों को अपने डसते हैं,
नहीं भरोसा कौन है अपना
निःस्वार्थ प्रेम बस है सपना,
जीते हैं हर रिश्ता डरकर
पीड़ा का एक गहन समंदर, पलता है इस मन के अंदर,..

कभी ज्वार उठता है मन में
मोती बिखरे मिलते आंगन में,
जब भाटा आता भावों का
दुख बहा ले जाता संग में,
जीते हैं सुख के मोती चुनकर
पीड़ा का एक गहन समंदर, पलता है इस मन के अंदर,..

****

कितनी मैं मजबूर हूँ,..।

साथ तेरे होकर भी मैं कितनी तुझसे दूर हूँ,
हालात के हाथों देखो कितनी मैं मजबूर हूँ।

दो कदम चलकर जब तू खुद पास मेरे आया था,
तुझे मेरी ये सादगी और भोलापन ही भाया था,
तूने लोगों से ये सुना था मैं बहुत मगरूर हूँ,
कितनी मैं मजबूर हूँ,..।

तूने मिलाकर हाथ मुझसे बांध लिया नेह का बंधन,
मैंने भी तो किया समर्पित आस, विश्वास और यह मन,
फिर भ्रांतियां ये टूटी तेरी कि मैं बहुत मशहूर हूँ,
कितनी मैं मजबूर हूँ,..।

चार कदम संग तभी चला जब साथ से था फायदा,
जीवन में साथी बन तो गया पर जीवनसाथी नही बना,
बिखरे जीवन के फेरे में टूटे वचनों का दस्तूर हूँ,
कितनी मैं मजबूर हूँ,..।

बढ़ा लिया है फासला तूने प्यार का ये दिया सिला,
कुछ न मिलेगा मेरे साथ से फिर क्यों करूं कोई गिला,
जा चला जा दूर मुझसे अभी मैं गम से चूर हूँ
कितनी मैं मजबूर हूँ,..।

****

आंखों के नीर

अक्षर अक्षर लिखते पीर,.. स्याही बने आंखों के नीर,..
कैसे बंधाऊं खुद को धीर,.. अक्षर अक्षर लिखते पीर,..

सुधियों को कैसे बिसाराऊं,
टीस हृदय की याद दिलाए,
कैसे भूलूं उन घावों को
जो अपनों ने ही लगाए,
कैसे बंधाऊं खुद को धीर, अक्षर अक्षर लिखते पीर,

पल पल डोले मन की नैय्या
कोई नहीं है इसका खिवैय्या,
तपती धूप से जल गए सपने
ढूंढते ढूंढते शीतल छैंय्या,
मन की आस अब ढूंढे तीर, अक्षर अक्षर लिखते पीर,..

जीवन तूने बहुत संभाला
घूंट घूंट पी गम की हाला,
फूंक फूंक कर राहत दे दे
सूखेगा फिर हर इक छाला,
बदलेगी हाथों की लकीर, अक्षर अक्षर लिखते पीर,..

****

दस्तक दे रहा है दर्द

दस्तक दे रहा है दर्द, कोई दिल पर आज,
लगता है फिर से हुई, कोई खुशी नाराज़।

सोचती हूं हर बार न
होठों पर हंसी आए,
कोई न इस तरह से
यूं मुझे नज़र लगाए,
गुलशन पर मेरे कोई, फिर गिरा गया है गाज़,
लगता है फिर से हुई, कोई खुशी नाराज़
दस्तक दे रहा है दर्द, कोई दिल पर आज।

सोचा न था मैं कभी
गाऊंगी प्रेम धुन,
मिला दिए सुर में सुर
गीत तेरे सुन,
वक्त ने छेड़ दिया, कैसा गम का साज,
लगता है फिर से हुई, कोई खुशी नाराज़
दस्तक दे रहा है दर्द, कोई दिल पर आज।

दांव पेंच आते नहीं थे
मैं तो थी नादान,
भरोसा सब पर किया
अपना उन्हें मान,
था कौन छुपा अपनों में गैर, ये भी तो है राज़,
लगता है फिर से हुई, कोई खुशी नाराज़
दस्तक दे रहा है दर्द, कोई दिल पर आज।

****

साजिशों से बचती हूं

हर कदम पर साजिशों से बचती हूं,
थोड़ा थोड़ा रोज खुद को रचती हूं,...।

हर दौर में मिलती नयी चुनौती है,
हर पल में कठिन परीक्षा होती है,
डगमगाते हैं कदम डरता है मन
पर हौसला अपना संभाले रखती हूं,
थोड़ा थोड़ा रोज खुद को रचती हूं,
हर कदम पर साजिशों से बचती हूं,..।

रँग उलझन के कभी ये वक्त भरता है,
घात हर बार कोई अपना करता है,
ये दुनिया बदलें पल पल अपने रंग
पर नीयत अपनी मैं साफ रखती हूं,
थोड़ा थोड़ा रोज खुद को रचती हूं,
हर कदम पर साजिशों से बचती हूं,...।

जाने कितनी बार बन के ढहती हूं,
थपेड़े हालात के कितने सहती हूं,
भावनाओं के ज्वार भी तो आते है
पर भरोसा अपने हुनर पर रखती हूं,
थोड़ा थोड़ा रोज खुद को रचती हूं,
हर कदम पर साजिशों से बचती हूं,..।

जानती हूं भ्रम है सारे रिश्ते नाते,
द्वेष मन में पालकर राग दिखलाते,
आँसुओं को घूंट-घूंट पी कर भी
होठों पर मीठी सी मुस्कान रखती हूं,
थोड़ा थोड़ा रोज खुद को रचती हूं,
हर कदम पर साजिशों से बचती हूं,...!

****

कुछ अच्छा ही होगा कल

मनचाहा कम ही मिलता है, जो पाया है वो सहता चल,..
कुछ अच्छा ही होगा कल, समय के साथ बहता चल,..

खेल बहुत खेले बचपन में
रेत के महल बनाने के,
गुड्डे गुड़िया का ब्याह किया
खुश होने के बहुत बहाने थे, लौट नहीं सकते वो पल,
समय के साथ बहता चल, कुछ अच्छा ही होगा कल,..

छुटपन में सपने देख हम
नींद में भी मुसकाते थे,
जागते ही कुछ सपने तो
मां पापा से पूरे हो जाते थे, अब सपनें भी करते हैं छल,
समय के साथ बहता चल, कुछ अच्छा ही होगा कल,..

कर्तव्य निभाएं या न निभाएं
अधिकारों की खातिर लड़ते है,
अपनों से अपनापन न हो
गैरों की झंझट में पड़ते हैं, फिर कैसे हो जीवन सरल,
समय के साथ बहता चल, कुछ अच्छा ही होगा कल,..

नेह के बंधन में न बंधना
टूटकर जो पीड़ा देते हैं,
न किसी से बैर ही रखना
सुख सारे जो मिटा देते हैं, कर्मों का ही मिलता है फल,
समय के साथ बहता चल, कुछ अच्छा ही होगा कल,..

मनचाहा कम ही मिलता है, जो पाया है वो सहता चल!
कुछ अच्छा ही होगा कल, समय के साथ बहता चल,..!

****

दर्द परख ले

दर्द परख ले जो इस दिल का,
वो दिलदार नही मिल पाया।

शब्द शब्द को रचते रचते,
चाह रही समझाने की।
लय सुर ताल नहीं जानूं मैं,
कोशिश तो की गाने की।
राग सुनाती हरष-हरष कर, वो आधार नहीं मिल पाया।।
दर्द परखले जो इस दिल का, वो दिलदार नही मिल पाया।

मेरा कर्कश दर्द भरा यह,
राग सलोना कौन सुनेगा।
मन ही मन पीड़ा सहना है,
मौन अधर का कौन गुनेगा।
हँस कर पीर बटाएं मेरी,
वो हक़दार नहीं मिल पाया।
धड़कन की लय को जो समझे, वो फनकार नही मिल पाया।
दर्द परख ले जो इस दिल का, वो दिलदार नही मिल पाया।

खैर चलो यह भी अच्छा है,
मैं पीड़ा की आज धनी हूँ।
लिख कर मैं मन के भावों को,
पीड़ा की अनुभूति घनी हूँ।
पीड़ा हर कर सुख दे देता,
वो मनुहार नहीं मिल पाया,
धड़कन की लय को जो समझे, वो फनकार नही मिल पाया,
दर्द परख ले जो इस दिल का, वो दिलदार नही मिल पाया।

****

मन का मीत

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत,...
तू ही है मेरे मन में, तू ही मन का मीत,...

सुर लय ताल नहीं जानू, है भाव भरी बातें मन में,
सोचूं भी मैं तुझको तो, उठती है तरंगों सी तन में,
लिख सकती हूं धुन बिना, मीठा सा प्रेम का गीत,...
तू ही है मेरे मन में, तू ही मन का मीत,...
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत,...

माना आया है जीवन में, संघर्षों का ये कालचक्र,
खुशियां ने भी डाल रखी, हम पर अपनी दृष्टि वक्र,
हाथ में तेरा हाथ रहे तो, दुख में भी हो खुशी प्रतीत,...
तू ही है मेरे मन में, तू ही मन का मीत,...
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत,....

साथ जो तू चलेगा तो, मंजिल मिल ही जाएगी,
हर मुश्किल से लड़ लूंगी, बीच में जो भी आएगी,
जिद नहीं ये प्रीत है मेरी, समझ प्रेम की रीत,..
तू ही है मेरे मन में, तू ही मन का मीत,...
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत!

****

तू मेरा और बस मेरा है

तू मेरा और बस मेरा है, बस ये कह दे गले लगाकर,..
तन मन की हर पीर भुला दूं, बस साथ तेरा मैं पाकर,..

सांसों को राहत मिलती है
बस तेरी सांसों से मिलकर,
खुशबू घुल जाती फ़िज़ा में
मिल जाए मुसकान जो खिलकर,
दे दे ख़ुशी ये मुझको लाकर, बस एक साथ तेरा मैं पाकर,..
तन मन की हर पीर भुला दूं, बस ये कह दे गले लगाकर,...
तू मेरा और बस मेरा है,...

हाथ मेरा हाथों में लेकर
अहसासों से जीवन भर दे,
मुझमें खो जा मेरा होकर
और प्रीति को पावन कर दे,
धन्य मुझे कर जीवन में आकर, बस एक साथ तेरा मैं पाकर,..
तन मन की हर पीर भुला दूं, बस ये कह दे गले लगाकर,...
तू मेरा और बस मेरा है,...

आधि व्याधि से लड़ते लड़ते
पीर बहुत सी सह ली है मैंने,
तू भी कह दे अपने मन की
अपने मन की कह दी है मैंने,
क्या तू खुश है मुझे अपनाकर, बस एक साथ तेरा मैं पाकर,..
तन मन की हर पीर भुला दूं,, बस ये कह दे गले लगाकर,...
तू मेरा और बस मेरा है,...

****

खुशी की कड़ी

माना है ये मुश्किल घड़ी, हर कदम पे है पीड़ा खड़ी,
मन थोड़ा सा धीरज धरो, ढूंढो कोई खुशी की कड़ी,..

कर्म करना ही कर्तव्य है,
सरल किसका गंतव्य है,
समझा मन ये खुद को जरा,
अब क्या तेरा मंतव्य है,
नज़र मंजिल पे रख गड़ी,.. माना है ये मुश्किल घड़ी,..

हर पल में तू रख हौसला,
डरकर कब है साहिल मिला,
तैरने की तू कोशिश तो कर,
डूबने का ही क्यूं है गिला,
पार सागर के मंजिल पड़ी,.. माना है ये मुश्किल घड़ी,..

बिन मेहनत मिला कुछ तो क्या,
फल मीठा वो होगा नहीं,
सब्र कर ले जरा सा तू मन,
भाग्य का लेख टलता नहीं,
ये सचाई है सबसे बड़ी,... माना है ये मुश्किल घड़ी,...

माना है ये मुश्किल घड़ी,... हर कदम पे है पीड़ा खड़ी,
मन थोड़ा सा धीरज धरो, ढूंढो कोई खुशी की कड़ी,..!

****

सब साथी हैं मतलब के

सब साथी हैं मतलब के, बिन मतलब कब कौन मिला।
किस्मत ही जब बैरन हो, संबंधों से फिर कैसा गिला।

बचपन था जब खेल खिलाता, बात बात में पाठ सिखाता,
नींद बहुत मीठी आती तब, सपने भी मीठे दिखलाता,
जैसे जैसे बड़े हुए हम, सच के कांटों पर फूल खिला,..
सब साथी हैं मतलब के, बिन मतलब कब कौन मिला।
किस्मत ही जब बैरन हो, संबंधों से फिर कैसा गिला.।

यौवन के सब सपने रंगीन, हर पहलू लगता था हसीन,
तब नातों के ताने बाने का, हर धागा था बड़ा ही महीन,
नाजुक नेह के धागों से था, हर रिश्ता नाजों से सिला..
सब साथी हैं मतलब के, बिन मतलब कब कौन मिला।
किस्मत ही जब बैरन हो, संबंधों से फिर कैसा गिला।

रिश्तों को दुनिया कहने वालों, रिश्तों की दुनिया गोल नहीं,
अब जीवन उस मोड़ पर है, जब भावों का कोई मोल नहीं,
मैंने सर्वस्व दिया रिश्तों को, कोई एक अपना नही मिला,..
सब साथी हैं मतलब के, बिन मतलब कब कौन मिला
किस्मत ही जब बैरन हो, संबंधों से फिर कैसा गिला

दर्द ख़ुशी और धूप छांव, सब आते जाते रहते हैं,
हरदम तेरे साथ रहेंगे, कुछ अपने ये भी कहते है,
मैंने खुदको पाया तनहा, जब जब पीड़ा का शूल खिला,..
सब साथी हैं मतलब के,बिन मतलब कब कौन मिला।
किस्मत ही जब बैरन हो,संबंधों से फिर कैसा गिला।

****

पीड़ा इतनी गहन हुई

सहन किया सब कुछ मैंने, बातें जब तक सहन हुई,..
रोक नहीं पाई आंसू, पीड़ा इतनी गहन हुई!

कभी न तोड़ी सीमाएं, हर नाते को मान दिया,
बस अपनापन पाने को, सबको अपना जान लिया,
भाव नही समझे अपने, व्यथा कथा का कहन हुई,
रोक नहीं पाई आंसू, पीड़ा इतनी गहन हुई,
सहन किया सब,....

अपने ही जब गैर हुए, सपने मेरे बिखर गए,
उलझन थोड़ी और बढ़ी, नाते मन से उतर गए,
छोटी छोटी बातों में, सारी खुशियां दहन हुई,
रोक नहीं पाई आंसू पीड़ा इतनी गहन हुई,
सहन किया सब,....

पनपा शक का कीट जहां, प्रेम खिला कब उस आंगन,
आज हुआ सूना सूना, खिला खिला था जो उपवन,
गलतफहमियां भी ढोई, जितनी जब तक वहन हुई,
रोक नहीं पाई आंसू,पीड़ा इतनी गहन हुई,
सहन किया सब,....

रोक नहीं पाई आंसू, पीड़ा इतनी गहन हुई,
सहन किया सब कुछ मैंने, बातें जब तक सहन हुई!

****

दर्द समंदर जितना गहरा

दर्द समंदर जितना गहरा,
आंखों पर पलकों का पहरा।

भीतर भीतर घुटते रहते
अपनी पीड़ा किस से कहते,
मुसकानों की ओट लिए है
अब आंसू कोरों पर ठहरा।
दर्द समंदर जितना गहरा, आंखों पर पलकों का पहरा।

बातें अपनों से कहनी थी
बातें अपनों की सुननी थी,
जिसको भी आवाज लगाई
हर अपना था गूंगा बहरा ।
दर्द समंदर जितना गहरा, आंखों पर पलकों का पहरा।

यूं तो सब कहते अपने है
उनसे ही टूटे सपने हैं,
अपनी अपनी ढफली बाजे
काले मन पर रंग सुनहरा।
दर्द समंदर जितना गहरा, आंखों पर पलकों का पहरा।

****

कहता मन मेरा

जी करता अब जी भर जी लूँ, साथ मिला तेरा।
हँस कर सह लूँ सुख दुख सारे, कहता मन मेरा।।

अंतस पर घनघोर घटा के, मौसम आए थे,
उमड़ घुमड़ दहशत के बादल, नभ पर छाए थे,
बिखरे बिखरे मन को मेरे, गम ने था घेरा।
जी करता अब जी भर जी लूँ, साथ मिला तेरा।
हँस कर सह लूँ सुख दुख सारे, कहता मन मेरा।।

आज सजाये सपने फिर से, सोच नई पाई,
छोड़ निराशा की बातों को, नव आशा लाई,
मिटे अंधेरे गहन व्याप्त हो, किरणों का घेरा....
जी करता अब जी भर जी लूँ, साथ मिला तेरा।
हँस कर सह लूँ सुख दुख सारे, कहता मन मेरा।।

पथ में कांटे बहुत बिछे थे, डर के थे साये,
महका मेरे मन का उपवन, फूल तुम्ही लाये,
फिर से मेरे मन आंगन में, खुशियों का डेरा,
जी करता अब जी भर जी लूँ, साथ मिला तेरा।
हँस कर सह लूँ सुख दुख सारे, कहता मन मेरा।।

****

भावों की सरिता

मन में बहती भावों की सरिता, मेरी बस उससे पहचान।
मैं कैसे कोई गीत लिखूं, मुझे नहीं छंदों का ज्ञान।।

भावों को लिखती बुनती हूं, लोगों की सुनती हूं बात।
मन विचलित सा रहता मेरा, बीत गई फिर से इक रात।।
जोड़ तोड़कर कुछ लिखती हूं, ढूंढूं नये शब्दों की खान।
लेखन में जीवन बसता है, लेखन में बसते हैं प्राण।।
मन में बहती भावों की सरिता, मेरी बस उससे पहचान।
मैं कैसे कोई गीत लिखूं, मुझे नहीं छंदों का ज्ञान।।

भाव प्रेम या मिलन-विरह के,स्मृतियों से आँखों में नीर।
व्यथित सदा रहता है मन ये, कैसे बंधाऊँ मन को धीर।।
सुन भी लूं मैं गीत खुशी के ,मन गाता पीड़ा का गान।
अधर भले ही मुसकाते हैं, धड़कन छेड़े दुख की तान।।
मन में बहती भावों की सरिता, मेरी बस उससे पहचान।
मैं कैसे कोई गीत लिखूं, मुझे नहीं छंदों का ज्ञान।।

सुख दुख की गणना कैसे हो, लघु गुरु हो या सुर लय ताल।
गिन गिन मैं कैसे बतलाऊँ, अपने इस जीवन का हाल।।
सीख नहीं पाई अबतक मैं, न कोई विधा न ही विधान।
गीत जगत में कभी मिलेगा, मेरे इन भावों को मान???
मन में बहती भावों की सरिता, मेरी बस उससे पहचान।
मैं कैसे कोई गीत लिखूं, मुझे नहीं छंदों का ज्ञान।।

****

कुछ सपने अंधियारो में

रातों को बुनता रहता मन, कुछ सपने अंधियारो में,
मेरी तनहाई में अकसर, साथ निभाया तारों ने,..

भीड़ बह्त है इस दुनिया में
मन मेरा घबराता है,
सिमटा सा रहता है खुद में
आहट से डर जाता है
हौले हौले से समझाया, मन को रोज इशारों में,
मेरी तनहाई में अकसर, साथ निभाया तारों ने,..
रातों को बुनता रहता मन, कुछ सपने अंधियारो में,..

दूर तलक तनहा चलकर मैं
जब मंजिल की ओर बढ़ी,
ठोकर खाई थी पग पग में
तब इक इक सोपान चढ़ी,
पर्वत घाटी नदियां बनकर, रोकी डगर नज़ारों ने,
मेरी तनहाई में अकसर, साथ निभाया तारों ने,
रातों को बुनता रहता मन, कुछ सपने अंधियारो में,...

अटल इरादे रखने से ही
सपने सफल नहीं होते,
कर्म कठिन करने पड़ते है
हँसकर या रोते रोते,
जिसके सब सपने पूरे हो, वो हो एक हज़ारों में,
मेरी तनहाई में अकसर, साथ निभाया तारों ने,
रातों को बुनता रहता मन, कुछ सपने अंधियारो में,..

****

जीना है तो जीना है

चलते चलते मुझको सबसे, बस इतना ही कहना है,..
जब तक साँस लिखी है तब तक, जीना है तो जीना है,..

चाहे न कटे ये दिन सुख से
मैं हरदम बेचैन रहूं,
कहने को है बात बहुत पर
सोच रही हूं कुछ न कहूं,
पीड़ा अंतस को भेद रही, सहना है तो सहना है,..
जब तक साँस लिखी है तब तक, जीना है तो जीना है,..

साथ नहीं कोई पलभर भी
तनहा तनहा रहती हूं,
घुलती रहती हूँ मन ही मन
मैं भावों में बहती हूँ,
भीड़ रहे या सन्नाटा हो, रहना है तो रहना है,...
जब तक साँस लिखी है तब तक, जीना है तो जीना है,..

लोगों में खुशियां बाँट सकूँ
ये हसरत मेरे मन में रही,
बदले में पीर मिली हरदम
वो भी मैंने चुपचाप सही,
आँखों से आंसू हर पल में, बहना है तो बहना है,..
जब तक साँस लिखी है तब तक, जीना है तो जीना है,..
चलते चलते मुझको सबसे, बस इतना ही कहना है,...

****

खुशियों ने की ताकाझांकी

खुशियों ने की ताकाझांकी आज हमारे आँगन में।
बदला बदला सा कुछ तो है आज हमारे जीवन में।।

हाथों में हाथ रहा उनका, और कदम भी साथ बढ़ें।
ढलती शामों के साये में, सपने भी परवान चढ़े।
लगता है महका सा कोई, फूल खिला है गुलशन में।
खुशियों ने की ताकाझांकी आज हमारे आँगन में।।

आँखों आँखों में रात कटी, बातों में बीत गया दिन।
अधरों पर मुसकान टिकी हो, कम आते है ये पलछिन।
आशा का इक दीप जला है, सूने सूने से मन में।
खुशियों ने की ताकाझांकी, आज हमारे आँगन में।।

मंदिर की घंटी जैसा स्वर, गूंज रहा है कानों में,
नव संचार हुआ हो जैसे , अब ऊर्जा का प्राणों में।
रंगत बदली ऐसी जैसे, मिल गया हो केसर चंदन में।
खुशियों ने की ताकाझांकी आज हमारे आँगन में।।

बदला बदला सा कुछ तो है आज हमारे जीवन में।।

****

अच्छे दिन तो आने दो

हम गीत विजय के गा लेंगे, अच्छे दिन तो आने दो।
सबने जो देखे थे सपने, वो सब सच हो जाने दो।।

साफ रहे भारत इस खातिर, कितनों ने झाड़ू थामे।
फिर सड़कों पर वो काम किया, जो न किया अपने घर में।
मन का कूड़ा कौन समेटे, बात समझ मेंआने दो।
हम गीत विजय के गा लेंगे, अच्छे दिन तो आने दो।
सबने जो देखे थे सपने, वो सब सच हो जाने दो।।

धरती को दें माँ का दरजा, इसका कोई मान नही।
नारी की लाज नही रखते, मन में भी सम्मान नही।
नज़रें और नीयत साफ रखें, अब ये पाठ पढ़ाने दो।
हम गीत विजय के गा लेंगे, अच्छे दिन तो आने दो।
सबने जो देखे थे सपने, वो सब सच हो जाने दो।।

भ्रष्टाचार मिटाना हो तो, खुद ही कदम उठाना है।
कालेधन की कोठरियों का, मन से मोह भगाना है।
ज्ञान नही देना दूजों को, सीख अमल में लाने दो।
हम गीत विजय के गा लेंगे, अच्छे दिन तो आने दो।
सबने जो देखे थे सपने, वो सब सच हो जाने दो।।

****

चाह मिलन की

चाह मिलन की दिल मेंकितनी, कैसे बतलाऊँ।
खुद से करती बतियाँ-वतियाँ, खुद ही शरमाऊं।।

राह तकूँ तुम कब आओगे, साजन बतलाओ,..
कैसे मन को धीर बंधाऊँ, ये भी समझाओ,..
बैठ अकेले में गुमसुम सी, मन में घबराऊँ,..
चाह मिलन की दिल मेंकितनी, कैसे बतलाऊँ।
खुद से करती बतियाँ-वतियाँ, खुद ही शरमाऊं।।

आशा का दामन थाम लिया, जब जीना ही है,..
विरह सहूँ रोकर या हँसकर, पर मिलना ही है ,..
सोच रही मिलने आओ तो, मैं भी तड़पाऊं,..
चाह मिलन की दिल मेंकितनी, कैसे बतलाऊँ।
खुद से करती बतियाँ-वतियाँ, खुद ही शरमाऊं।।

छोड़ दिये भय दुनिया के जो, तुमसे दूर करे,..
तोड़ दिये बंधन सारे अब, जो मजबूर करे,..
इक प्रीत भरा नाता तुझसे, जिसपर इठलाऊँ,..
चाह मिलन की दिल मेंकितनी, कैसे बतलाऊँ।
खुद से करती बतियाँ-वतियाँ, खुद ही शरमाऊं।।

****

नश्तर

समय के छोड़े नश्तर खुद को चुभो लिए।
सोचा हंसे किस बात पर और फिर से रो लिए।

मैं रहूंगी चुप आज सारे बोलिये,
दबा रखा है जो वो गुबार खोलिए,
जानूं तो क्या है छुपा मेरे लिए मन में,
आज मुझे अपने ही तराजू में तोलिये।
सोचा हंसे किस बात पर, और फिर से रो लिए।

जहर न धीमे धीमे मेरे लहू में घोलिये,
दर्द मुझे जो मिले वो सीने में बो लिये,
सींचती हूँ ज़ख्म सारे बड़े ही जतन से
सूखने लगे तो फिर अश्कों से धो लिए
सोचा हंसे किस बात पर, और फिर से रो लिए।

रिश्तों की माला में कुछ अपने पिरो लिए
यादों और उम्मीदों के लम्हे संजो लिए
अब फैसला जो भी करें छोड़ा जमाने पर
ढाल दे जो जैसे भी हम वैसे हो लिए
सोचा हंसे किस बात पर, और फिर से रो लिए।

समय के छोड़े नश्तर खुद को चुभो लिए।
सोचा हंसे किस बात पर और फिर से रो लिए।

****

दर्पण

इलज़ाम लगाते औरों पर, है ऐब बहुत सबके भीतर,
कबसे वो दर्पण ढूंढ रही, झांक सके जो मन के अंदर!

स्वार्थ निहित हो जिसमें मेरा
संबंध नही ऐसे रखती
जो संबंध मिले किसमत से
उनसे द्वंद नहीं रखती
मुझको फर्क नही पड़ता है, कैसा माहौल बना बाहर,
कबसे वो दर्पण ढूंढ रही, झांक सके जो मन के अंदर!

आगे बढ़ते लोगों को मैं
पीछे न कभी खींचा करती
साथ जिसे चलना हो मेरे
मैं हाथ नहीं छोड़ा करती
मेरा ही हाथ पकड़ मुझको, कितनों ने ही मारी ठोकर,
कबसे वो दर्पण ढूंढ रही, झांक सके जो मन के अंदर!

लोग बहुत देखे हैं ऐसे
जो परखें दूजों के लेखे
लोग कहीं ऐसे भी हो जो
खुद के करमों को भी देखें
कोई जगह बनी हो ऐसी, ढूंढो ऐसा धरती अंबर,
कबसे वो दर्पण ढूंढ रही, झांक सके जो मन के अंदर!

****

दो जून की रोटी

मेहनत की जब फसल उगाई,
दो जून की तब रोटी पाई।

फिरते रहे डगर डगर में,
कोई न काम मिला निज घर में,
शहर तक जब दौड़ लगाई,..
मेहनत की जब फसल उगाई,
दो जून की तब रोटी पाई।

डिग्रियां लिए दर दर भटके,
दिन रात बस यूंही थे कटते,
घर की दशा आंसू ले आई,..
मेहनत की जब फसल उगाई,
दो जून की तब रोटी पाई।

आंसू बहे अपनों की खातिर,
सींचा पसीने से घर मंदिर,
सपने निगले जब मंहगाई,..
मेहनत की जब फसल उगाई,
दो जून की तब रोटी पाई।

****

'मैं' का बंधन

बस 'मैं' का बंधन तोड़ दे
टूटे दिलों को जोड़ दे

होगा नही कुछ कलह से
बेवजह ऐसे तड़प मत
रोना रुलाना छोड़ दे
बस 'मैं' का बंधन तोड़ दे
टूटे दिलों को जोड़ दे

तुझको किसी ने पीर दी
छाले पड़े हैं और जो
चल आज सारे फोड़ दे
बस 'मैं' का बंधन तोड़ दे
टूटे दिलों को जोड़ दे

मत मार मन की प्रीत को
अब राह अपनी तू बदल
घर की तरफ रुख मोड़ दे
बस 'मैं' का बंधन तोड़ दे
टूटे दिलों को जोड़ दे,...!

****

भारत की भाषा हिंदी हो

भारत से प्रेम रगों में हो
भारत की भाषा हिंदी हो

पूरब से लेकर पश्चिम तक
मन से भाषा का मान करे
उत्तर से लेकर दक्षिण तक
जन जन इसका सम्मान करें।
हर एक प्रदेश इसे बोले, हो मातृभाषा की जयकार
समझें जो लोग अहिंदी हो, भारत की भाषा हिंदी हो।

भाषा की अपनी खूबी है,
सुंदरता व मर्यादा है।
समझ किसी की भाषा पर
माना कुछ कम ज्यादा है।
पर अभियान रहे जारी, हो जन गण मण की कंठहार
चीनी हो या फिर सिंधी हो, भारत की भाषा हिंदी हो।

अपनी भाषा में चिंतन से,
क्षितिज नये खुल जाते है।
सच है भाषा सध जाने से
विकल्प कई मिल जाते हैं।
नजदीक उन्हें यह ले आती, जो प्रेम करें इससे गहरा
यह हर माथे की बिंदी हो, भारत की भाषा हिंदी हो।

****

पीर बहुत है,..

पीर बहुत है मेरे मन में, और वजह कोई अपना है!
पलकों की कोरों पर अटका, मेरा ही टूटा सपना है!

आंगन में तुलसी रोंपी थी, सोचा अब घर महकेगा
कोई लम्हा आकर आंगन में, कुछ पल को तो चहकेगा
पर तुलसी की किसमत ही, धूप में पल पल तपना है
पीर बहुत है,..

कर्म हमेशा वही किये जो, सुख अपनों को दे पाये
अपनो के सुख की खातिर ही, सुख अपने भी बिसराये
सार यही निकला आखिर में, जीवन को यूं ही खपना है
पीर बहुत है,..

होते हैं सब लेखे जोखे, कालचक्र के खातों में
अस्त्र-शस्त्र से घाव किया या, जहर दिया हो बातों में
हर हरकत का फल आखिर में, खुद को ही तो चखना है
पीर बहुत है,..

देश बढ़े, इतिहास गढ़े या, प्रगति के सोपान चढ़े
राष्ट्र जागरण का प्रण करके, साक्षरता का पाठ पढ़े
विकसित हो जन-जन का जीवन, अब मंत्र यही तो जपना है
पीर बहुत है,..

पीर बहुत है मेरे मन में, और वजह कोई अपना है!
पलकों की कोरों पर अटका, मेरा ही टूटा सपना है!

****

कुछ तो टूट रहा है अंदर

कुछ तो टूट रहा है अंदर, कितना छल फैला है बाहर!

कोई तो मिल जाता ऐसा
जिसका कोई स्वार्थ न हो
पर बिन मतलब कोई नाता
कब निभता है जीवन भर
कितना छल फैला है बाहर, कुछ तो टूट रहा है अंदर!

कोई डगर न सीधी सादी
सब कुछ है उलझा उलझा सा
बिन घोटालों के जीवन का
आसार न कोई इधर उधर
कुछ तो टूट रहा है अंदर, कितना छल फैला है बाहर!

सपने अपने रिश्ते नाते
इनका कोई आधार नही
किसको माने किसको पूजें
और भरोसा हो तो किसपर
कुछ तो टूट रहा है अंदर, कितना छल फैला है बाहर!

प्रेम समर्पण कसमें वादे
भोला मन या नेक इरादे
अपनों के आघातों से ही
जाते है सब भाव बिखर
कुछ तो टूट रहा है अंदर, कितना छल फैला है बाहर!

****

सारे ही भाव अधूरे हैं

सारे ही भाव अधूरे हैं, तुम बिन मेरे जीवन में,...

नटखट सी बरखा की बूंदें
करे अठखेलियां सावन में
रिमझिम रिमझिम बरसे बदरा
और तुम मन के आंगन में
सारे ही भाव अधूरे हैं, तुम बिन मेरे जीवन में,...

शीत की शीतल बयारों में
थरथर करती बहारों में
रवि ओढ़ कर रहे कुहासा
और हम तुम वृंदावन में
सारे ही भाव अधूरे हैं, तुम बिन मेरे जीवन में,...

ऋतुराज बसंत की पुरवाई
रंग बसंती लेकर आती
छटा पलाश बिखेरे जग में
और तुम मन के कानन में
सारे ही भाव अधूरे हैं, तुम बिन मेरे जीवन में,...

गरमी में दिनकर का पारा
रहता हरदम बढ़ा चढ़ा सा
ताप उढ़ेले गगन धरा पर
और तुम प्रेमसुधा मन में
सारे ही भाव अधूरे हैं, तुम बिन मेरे जीवन में,...

****

ये कैसे डेरे हैं मन के

ये कैसे डेरे हैं मन के, जो भावों को छलते है,..

आस्था को डर जैसा पाले
जो जनमानस बैठा है
उनके कंधों पर पग रखकर
अगुआ सारे चलते है,..
ये कैसे डेरे हैं मन के, जो भावों को छलते है,..

सिर पर ताज पहनकर बैठे
जनता को बहकाते हैं
बातों में आकर आखिर में
हाथ हमेशा मलते है,..
ये कैसे डेरे हैं मन के, जो भावों को छलते है,..

किसको है परवाह जरा भी
उसकी जो झुक जाता है
लड़कर ही सारी दुनिया से
साहस वाले पलते हैं,..
ये कैसे डेरे हैं मन के, जो भावों को छलते है,..

जितने गहरे नाते मन के
उतने गहरे बंधन हैं
सुख की आशा में जो भटके
देखो जिंदा जलते हैं,..
ये कैसे डेरे हैं मन के, जो भावों को छलते है,..

****

तोड़ रही हूं नाते सबसे

तोड़ रही हूं नाते सबसे, इससे उससे तुमसे खुद से...

तितली सा उड़ता फिरता मन, पीड़ा से बिधता है कैसे,
घायल पर देखे हैं तब से, तोड़ रही हूं नाते सबसे,
इससे उससे तुमसे खुद से...

पतंग बंधी थी मांझे से, आकाश नया छूकर आई,
हाथ कटा मांझे से जब से, तोड़ रही हूं नाते सबसे,
इससे उससे तुमसे खुद से...

अपना अपना कहते कहते, चलन हुआ बस कहने का,
नाते निभते अब बातों से, तोड़ रही हूं नाते सबसे,
इससे उससे तुमसे खुद से...

बंधन जोड़ चुका था यह मन, भाव रहा केवल अपनापन,
घात मिले अपनों से तब से, तोड़ रही हूं नाते सबसे,
इससे उससे, तुमसे खुद से,..

जीवन में सुख दुख तो सम हैं, पर जीवों में धीरज कम है,
हर सुख जुड़ा किसी दुख से, तोड़ रही हूं नाते खुद से,
इससे उससे तुमसे सबसे

बंधन से अब जी उकताया, राग द्वेष मोह और माया,
कब निकलेंगे इस तन मन से, तोड़ रही हूं नाते सबसे,
इससे उससे तुमसे खुद से...तोड़ रही हूं नाते सबसे!

****

आंसू बन,..

आंसू बन अपनी पीड़ा को ढलने दो
मन ही मन कोई कुंठा मत पलने दो

घाव लगा कोई तो थोड़ा सा रो लो
अपने आंसू से ही घावों को धो लो
घावों को नासूर बना मत गलने दो
मन ही मन कोई कुंठा मत पलने दो, आंसू बन,..

जलते दुखते टीस भरे मन को थामो
अपना और पराया खुद ही पहचानो
अपना ही मन अपनों को मत छलने दो
मन ही मन कोई कुंठा मत पलने दो, आंसू बन,..

आघात अगर मन पर कोई दे जाये
सुख का कोई पल भी रास नही आये
शांत रखो मन को यूँ ही मत जलने दो
मन ही मन कोई कुंठा मत पलने दो, आंसू बन,..

कौन कभी अपनी नियति बदल पाया
जीवन भर कठपुतली सा नाच नचाया
डोर न टूटे काल बुरा ये टलने दो
मन ही मन कोई कुंठा मत पलने दो, आंसू बन,..

धीरज से लो काम समय ये बदलेगा
हो सकता है थोड़ा और समय लेगा
खेल समय का जैसा भी है चलने दो
मन ही मन कोई कुंठा मत पलने दो, आंसू बन,..

आंसू बन अपनी पीड़ा को ढलने दो!
मन ही मन कोई कुंठा मत पलने दो!

****

मुश्किल जब-जब भी आती है

मुश्किल जब-जब भी आती है,
बातें कितनी सिखलाती है।

कौन भला या फिर है भोला,
या किसने पहना है चोला,
कौन पराया या है अपना,
पहचान वही करवाती है।
मुश्किल जब-जब भी आती है,
बातें कितनी सिखलाती है।

सच-झूठ उजागर कर देती,
तब राज कई खुल जाते हैं,
कितनी क्षमता है किस किस में,
समय समय पर दिखलाती है।
मुश्किल जब-जब भी आती है,
बातें कितनी सिखलाती है।

ठोकर खाकर कौन गिरेगा,
कौन उठेगा साहस करके,
कौन कहाँ कितने पानी में,
हद कद सब कुछ समझाती है।
मुश्किल जब-जब भी आती है,
बातें कितनी सिखलाती है,..।

****

आशा का इक दीप

दी है आज दस्तक खुशियों नें, करती हूं स्वागत जी भर कर,..
आशा का इक दीप जला कर, राह तकी मैंने जीवन भर।

बहुत कठिन है जीवन यात्रा
कुछ ज्यादा पीड़ा की मात्रा
सूखे में सावन सा झरकर
अंतस को आंसू से तर कर
दी है आज दस्तक खुशियों नें, करती हूं स्वागत जी भर कर,..
आशा का इक दीप जला कर, राह तकी मैंने जीवन भर।

लगता संघर्षों का मेला
दुनियादारी विकट झमेला
सभी विषमताओं से लड़कर
कर्तव्य निभाये हरदम हँसकर
दी है आज दस्तक खुशियों नें, करती हूं स्वागत जी भर कर,..
आशा का इक दीप जला कर, राह तकी मैंने जीवन भर।

अब ये मैंने जान लिया है
खुद पर कुछ अभिमान किया है
अच्छे कर्म किये जीवनभर
सुख आया है तब फल बनकर
दी है आज दस्तक खुशियों नें, करती हूं स्वागत जी भर कर,..
आशा का इक दीप जला कर, राह तकी मैंने जीवन भर।

****

सिसक सिसक कर रातें रोई

सिसक सिसक कर रातें रोई, आह न सुन पाया पर कोई,
तुमको खोया जिसपल मैंने, किसमत सोई, खुशियां खोई,..

बांधा था मिलजुलकर हमने
सुख-दुख दोनों का गठबंधन,
ढीले कैसे होने दें जो
मन से मन का है अवगुंठन,
चैन नहीं मिलता दिन रैना, बरसे नैना नींदें खोई,..
सिसक सिसक कर रातें रोई, आह न सुन पाया पर कोई,..

चमक दमक वाली दुनिया में
मन को पलभर चैन नहीं है,
फल कर्मों के भोग रहे सब
चिंतन बस दिन रैन यही है,
लेकिन नूर गया सूरत का, रंगत भी जीवन की खोई,..
सिसक सिसक कर रातें रोई, आह न सुन पाया पर कोई,..

तेरी ही आँखों में मैंने
डाले थे सपनों के डेरे,
मेरी सीमाएं थी हरदम
तेरी ही बाहों के घेरे,
घेरे तुमने जब से तोड़े, रात नहीं कोई मैं सोई,..
सिसक सिसक कर रातें रोई, आह न सुन पाया पर कोई,..

****

एकाकीपन

एकाकीपन मन पर छाया, बैरन सी रातें,
सूना सूना मन का आंगन, किसे कहूं बातें,

सुख-दुख के लेखे जोखे में
अधिक मिली पीड़ा,
पीर छुपाने का मुसकानों ने
उठा लिया बीड़ा,
सिरहाने टूटे सपनों की, रख ली सौगातें,...
एकाकीपन मन पर छाया, बैरन सी रातें,...

ढूंढ रही हूँ कोई मतलब
अपने होने का,
आज तड़प कुछ ज्यादा ही है
भय कुछ खोने का,
हर कोशिश की जो आंखों की, रोके बरसातें
एकाकीपन मन पर छाया, बैरन सी रातें,..

दूर गगन है तारों वाला
साथ नहीं कोई,
नींदे खोई, चैन गवांया
छुप छुप कर रोई,
जीवन के शतरंज में हरदम, पाई है मातें,...
एकाकीपन मन पर छाया, बैरन सी रातें,...!

****

रे मन पीड़ा को बहने दे

रीता हो जा रे,..

जग के सारे सुख निंदिया में, तू भी सो जा रे
गहन हुई अब रंगत नभ की, होंगे उजियारे

जागी आंखों में कितने ही, सपने चुन डाले
रोटी की खातिर कितने ही, सपने भुन डाले
सो जा कुछ पल जी ले जीवन
स्वप्न नगर ज़ा रे
जग के सारे सुख निंदिया में, तू भी सो जा रे
गहन हुई अब रंगत नभ की, होंगे उजियारे

सच के तपते भू पर चलकर, पड़ते जो छाले
स्वप्न नगर के गादी तकियों में, अब राहत पा ले
कल फिर चलना होगा तुझको
दूर अभी तारे
जग के सारे सुख निंदिया में, तू भी सो जा रे
गहन हुई अब रंगत नभ की, होंगे उजियारे

एक अकेले अपना तूने, बोझा ढोया है
पर छुपछुप कर तनहाई में, कितना रोया है
चुप हो जा अब कुछ बेमतलब
तू मत सहना रे
जग के सारे सुख निंदिया में, तू भी सो जा रे
गहन हुई अब रंगत नभ की, होंगे उजियारे

रे मन पीड़ा को बहने दे, रीता हो जा रे,..

****

मैं बहुत पीड़ा में हूँ

मैं बह्त पीड़ा में हूँ, कहीं से कोई खुशी लाओ।
ये न पूछो क्या हुआ, बस घावों को सहलाओ।।

मेरे सपनों का घरौंदा, हाथों से है मेरे छूटा,
अब पड़ा है बिखरा-बिखरा, यहाँ-वहाँ सब टूटा-फूटा,
उठा लो टुकड़ा जो भी चाहो, पर चुभन से न दहलाओ,..
मैं बह्त पीड़ा में हूँ, कहीं से कोई खुशी लाओ।
ये न पूछो क्या हुआ, बस घावों को सहलाओ।।

भीगा-भीगा मन का कोना, रोकूं कैसे आँखों का रोना,
थम गई है दुनिया मेरी, न करो थोड़ी भी देरी,
थाम कर उँगली मेरी, मुझे कुछ दूर टहलाओ,..
मैं बह्त पीड़ा में हूँ, कहीं से कोई खुशी लाओ।
ये न पूछो क्या हुआ, बस घावों को सहलाओ।।

खो चुकी हूँ अपना सबकुछ, हिम्मत नहीं फिर भी है हारी,
कोशिशें करती रही हूँ, कोशिश मेरी अब भी है जारी,
हो सके तो साथ चलकर, कुछ दिलासा ही दिलाओ,...
मैं बह्त पीड़ा में हूँ, कहीं से कोई खुशी लाओ।
ये न पूछो क्या हुआ, बस घावों को सहलाओ।।

हौसले की बातें करो कुछ, अंतस में कोई आस जागे,
कहीं न मुझमें घर बना ले, कुछ करो कि डर दूर भागे,
करके बातें सुनहरे कल की, मेरे मन को बहलाओ,....
मैं बह्त पीड़ा में हूँ, कहीं से कोई खुशी लाओ।
ये न पूछो क्या हुआ, बस घावों को सहलाओ।।

****

पीड़ा तो मेरी सखी है पुरानी

पीड़ा तो मेरी सखी है पुरानी
खुशियों ने की है सदा बेईमानी

मुझपर जो बीता है, भीतर जो रीता है,
किसको दिखाऊँ, कैसे बताऊँ,
काफी नहीं है, बताऊँ जुबानी,
खुशियों ने की है सदा बेईमानी
पीड़ा तो मेरी सखी है पुरानी

मन है ये प्यासा, चहूँ दिश निराशा,
सूखा पड़ा है, खाली घड़ा है,
बचा है जरा सा, बस आँखों में पानी,
खुशियों ने की है सदा बेईमानी
पीड़ा तो मेरी सखी है पुरानी

तेरे बिन अधूरा, जीवन है मेरा,
न करना बहाना, बस लौट आना,
सच है यही, ये न कोई कहानी,
खुशियों ने की है सदा बेईमानी
पीड़ा तो मेरी सखी है पुरानी,..!

बदल दे इरादे, बाकी है वादे,
न ही खुद को सता, न दे मुझको सजा,
अब आ भी जा, बीते जिंदगानी,
खुशियों ने की है सदा बेईमानी
पीड़ा तो मेरी सखी है पुरानी,..!

****

भीग रहा है अन्तस मेरा

भीग रहा है अन्तस मेरा, जाने कैसा सावन है,
आँखें भीगी ही रहती है, जीवन में रूखापन है,..!

बातें आती है अधरों तक
आकर फिर रुक जाती है
मेरा मन जो कहना चाहे
आँखे वो झुठलाती है
आवाज़ निकलने को आतुर, कंठ में पर रुंधापन है,
भीग रहा है अन्तस मेरा, जाने कैसा सावन है,
आँखें भीगी ही रहती है, जीवन में रूखापन है,....!

करने को सब कुछ करती हूँ
पर जाने क्या करती हूँ
सब को लगता है जीती हूँ
लेकिन पल पल मरती हूँ
ऐसा आखिर क्यों होता है, इसका कुछ तो कारण है,
भीग रहा है अन्तस मेरा, जाने कैसा सावन है,
आँखें भीगी ही रहती है, जीवन में रूखापन है,...!

मन ही मन मैं जान रही हूँ
गलत सही हालातों को
नामुमकिन समझाना है
अपने मन की बातों को
खुद समझे जो करते दावा, मुझसे ही अपनापन है,
भीग रहा है अन्तस मेरा, जाने कैसा सावन है,
आँखें भीगी ही रहती है, जीवन में रूखापन है,...!

****

मेरा ये पागलपन

घाव मिला जब भी कोई, ये मन हँसकर टाल गया।
मेरा ये पागलपन ही, इस दुनिया को साल गया।।

मैं चुप ही रह लेती हूं, लोगों की सुनकर बातें।
मुझको अकसर अपनों से, दर्द की मिलती सौगातें।
रुक कर पलकों पर आंसू, आदत अपनी डाल गया।
घाव मिला जब भी कोई, ये मन हँसकर टाल गया।
मेरा ये पागलपन ही, इस दुनिया को साल गया।।

कदम बढ़े आगे जब भी, सबने बीच डगर रोका।
जो शामिल न रहा गम में, उसने खुशियों को रोका।
इन बिन मोल झमेलों में, अनमोल अनूठा काल गया।
घाव मिला जब भी कोई, ये मन हँसकर टाल गया।
मेरा ये पागलपन ही, इस दुनिया को साल गया।।

रीतेपन में जीवन के, रंग अलग से भर लेती।
सपने अपने अपनों के, जुटकर पूरे कर लेती।
भाग्य मगर चकमा देकर, सूनापन सा ढाल गया।
घाव मिला जब भी कोई, ये मन हँसकर टाल गया।
मेरा ये पागलपन ही, इस दुनिया को साल गया।।

टूटे कुछ सपने मेरे,मन के आंगन में बिखरे।
जितना टूटे जीवन में, उतना ही फिर से निखरे।
आशाओं का एक दीया, अरमानों को पाल गया।
घाव मिला जब भी कोई, ये मन हँसकर टाल गया।
मेरा ये पागलपन ही, इस दुनिया को साल गया।।

****

कोई हल न मेरे पास है

कोई हल न मेरे पास है, और अब न कोई आस है
खामोशियाँ ही ओढ़ लूँ, कि ये मन बड़ा उदास है

मुश्किलों का दौर है
तबाहियाँ चहुँ ओर है
बिखराव ये सिमटे जहाँ
ऐसा न कोई छोर है
उम्मीदें सारी खत्म हुई, साथी न कोई खास है
खामोशियाँ ही ओढ़ लूँ, कि ये मन बड़ा उदास है

मैं ढूंढती ही रह गई
कोई रहगुजर मिली नहीं
सफर को जो अंजाम दे
वो डगर मिली नहीं
अंधेरे बढ़ते चले गए, आगे न कोई उजास है
खामोशियाँ ही ओढ़ लूँ, कि ये मन बड़ा उदास है

हाथ छूटे साथ छूटे
फासले बढ़ते गए
मुँह मोड़कर अपने मेरे
चलते गए चलते गए
कुछ भी तो अब मुमकिन नहीं, हल भी तो समय का दास है
खामोशियाँ ही ओढ़ लूँ, कि ये मन बड़ा उदास है!
कोई हल न मेरे पास है, और अब न कोई आस है!

****

मुझसे मेरे मन का नाता

मेरी सांसों की डोर से, अन्तस के अंतिम छोर से।
मन का तो नाता जुड़ा है, आँखों की भीगी कोर से।

बैठी बैठी गुमसुम सी मैं, जाने क्या क्या गुनती हूँ,
जो किसी ने न कहा हो, वो भी अकसर सुनती हूँ,
भाव नहीं छुप पाते है मेरे,मनबसिया चितचोर से।
मन का तो नाता जुड़ा है, आँखों की भीगी कोर से।
मेरी सांसों की डोर से, अन्तस के अंतिम छोर से।

जब भी मैंने आस छोड़ी, खोने लगी जब हौसला,
बेवजह डरने लगी और, खुद से ही बढ़ गया फासला,
अंदर से आवाज़ देकर,फिर मन ने डाँटा जोर से।
मन का तो नाता जुड़ा है, आँखों की भीगी कोर से।
मेरी सांसों की डोर से, अन्तस के अंतिम छोर से।

फिर संभाला खुद को मैंने, जीना मुझे अपने लिये है,
कब आता है वो पोंछने, ये आँसू जिसके लिए है,
मैंने सीखा छुपकर रोना, मन के नाचते मोर से।
मन का तो नाता जुड़ा है, आँखों की भीगी कोर से।
मेरी सांसों की डोर से, अन्तस के अंतिम छोर से।

एकाकीपन को तो मैंने, अपना साथी मान लिया,
मुझसे ज्यादा कोई न मेरा, ये सच भी पहचान लिया,
मन मंथन ही मुझे बचाता, बाहर के अवांछित शोर से।
मन का तो नाता जुड़ा है, आँखों की भीगी कोर से।
मेरी सांसों की डोर से, अन्तस के अंतिम छोर से।

****

एक नई सी रीत

सुख में सब नाता जोड़े पर, दर्द में न कोई अपनाये,..!
चलो आज से ही जीने की, एक नई सी रीत बनायें,..!

खुश होकर मिलना है सबसे, सच सबका जाना है तब से,
कदम-कदम पर मिले फरेबी, मीठी बातों से भरमाये,
लूटा सबने अपना बनकर, फिर मुकरे और ऐंठे तनकर,
ढोल पीट-पीट कर सबको. खुद के ही गुणगान सुनाये,
सुख में सब नाता जोड़े पर, दर्द में न कोई अपनाये,..!
चलो आज से ही जीने की, एक नई सी रीत बनायें,..!

दस्तावेज लिखे रक्खे हैं, जितने छल या झूठ रचे हैं,
पन्नों में इतिहास लिखा है, जो खुद ही सब राज बताये,
चुप रहना है केवल तब तक, पानी पहूँचे न जब सिर तक,
लोक-लाज सब जाने समझें, समय सदा कुछ और सिखाये,
सुख में सब नाता जोड़े पर, दर्द में न कोई अपनाये,..!
चलो आज से ही जीने की, एक नई सी रीत बनायें,..!

अपशब्दों के बाण है झेले, लड़ना हक के लिये अकेले,
लेकिन सच का दामन थामे, वो ही सच्ची राह दिखाये,
आत्मसाक्षी से सच्चे रहकर, झांसो या वादों से बचकर,
बड़ी-बड़ी बातें मत करके, जो सोचा करके दिखलायें,
सुख में सब नाता जोड़े पर, दर्द में न कोई अपनाये,..!
चलो आज से ही जीने की, एक नई सी रीत बनायें,..!

****

दर्द की बदलियाँ है, गीत कैसे लिखूँ,.....!

घुटन की उमस है, शीत कैसे लिखूँ!
दर्द की बदलियाँ है, गीत कैसे लिखूँ!

मौसम गिरगिट की
सीख रहा है फितरत
मन पर डालता असर, प्रीत कैसे लिखूँ!

मन लड़ता है खुद से
बातें खुद ही बनाता
हारता खुद ही खुद से, जीत कैसे लिखूँ!

कुछ पलों की खुशी
कुछ पलों में गम है
ठहरता ही नहीं पल, बीत कैसे लिखूँ!

झीने से हैं पर्दे
जेहन और दिल के बीच
दिखता सब आर-पार, भीत कैसे लिखूँ!

दोस्ती रखती नहीं
न दुश्मनी है किसी से
न कोई हमराज है तो, मीत कैसे लिखूँ

दिन में दिनकर तम दिखाता
समय दिखाता दिन में तारे
सृष्टि की अठखेलियों की, रीत कैसे लिखूँ
दर्द की बदलियाँ है, गीत कैसे लिखूँ,.....!

****

रोना क्यों?

पल पल में पलकें भिगोना क्यों, हर इक पीर में रोना क्यों?

कुछ तो कर्मों की गलती है
और कुछ भाग्य भी रूठा है
समय समय की बात है
ये कालचक्र ही अनूठा है
जो मिला है उसे संभालो
व्यर्थ में सबकुछ खोना क्यों?
पल पल में पलकें भिगोना क्यों, हर इक पीर में रोना क्यों?

स्वार्थ की दुनिया है ये तो
सब जन निज हित ही चाहें
खुद को बदल सको तो बदलो
लोग नहीं बदलेंगे राहें
बीच सफर में ऐसे रुककर
रोने को ढूंढें कोना क्यों?
पल पल में पलकें भिगोना क्यों, हर इक पीर में रोना क्यों?

अपना मन अपना आंगन है
उसमें जो भी चाहे रख लो
मीठी अमिया खट्टी निम्बोरी
जो चखना हो वो चख लो
देहरी पर गुलमोहर लगाओ
कांटों की बेलें बोना क्यों?
पल पल में पलकें भिगोना क्यों, हर इक पीर में रोना क्यों?

****

कविता फूट-फूट कर रोई!

कविता फूट-फूट कर रोई, मेरा दोष बता दे कोई!

तुकांत-अतुकांत, गीत, छंद, मुखड़ा, अन्तरा या कोई बंद,
प्रेम विरह या क्रान्ति गीत बन, हर रुप में ही मैं सजती थी,
फिर वो सम्मान मैं क्यों खोई,
कविता फूट-फूट कर रोई, मेरा दोष बता दे कोई!

महाराजाओं की बैठक में, प्रेमी की अटारी या छत में,
फिल्मों के गीतों की धुन में, मंचों पर सावन-फागुन में
भावों की ही फसलें बोई,
कविता फूट-फूट कर रोई, मेरा दोष बता दे कोई!

आवाज़ सभी की सदा बनी, मैं भाषा का अभिमान बनी,
जिसने जब जैसे भी चाहा, संग उसके मैं वैसे ही ढली,
उपहास बनी किस्मत सोई,
कविता फूट-फूट कर रोई, मेरा दोष बता दे कोई!

हर युग में साहित्य की शान बनी, और संस्कृति की पहचान बनी,
आज कवि बन गए विदूषक, अश्लील शब्दावली, भद्दे रूपक,
या वासना का पर्याय है कोई,
कविता फूट-फूट कर रोई, मेरा दोष बता दे कोई!

चिंतन कर लें चिंतक सारे, आज विचारक बैठ विचारें,
उत्तरदायित्व लेखक कवियों का, और सच्चे साहित्य प्रेमियों का,
इसकी लाज बचा ले कोई,
कविता फूट-फूट कर रोई, मेरा दोष बता दे कोई!

****

मन के भीतर बैठ जुलाहा

मन के भीतर बैठ जुलाहा, भावों के धागे है बुनता।

आढ़े टेढ़े उलझे सुलझे
धागे कितने रंग-बिरंगे
कोई कैसा कोई कैसा
कोई किसके साथ जंचता
अपने मन से मेल मिलाता
और किसी की कब है सुनता
मन के भीतर बैठ जुलाहा, भावों के धागे है बुनता।

कौन सा ताना कहाँ जुड़ेगा
कौन सा बाना कहाँ खिलेगा
रिश्तों का हर ताना बाना
कितनी बार है बनता मिटता
टूटने की पीड़ा भी सहता
घुट घुट कितने सपने गुनता
मन के भीतर बैठ जुलाहा, भावों के धागे है बुनता।

नित नूतन करने की सोचे
मन ही मन कितना है भुनता
उलझे धागे को सुलझाता
नये कपास के फूल है चुनता
बैठ अकेले झेल झमेले
अपने ही सपनों को धुनता
मन के भीतर बैठ जुलाहा, भावों के धागे है बुनता।

****

नव्यबोध

नवगीत मांगते नव्यबोध, वो बोध कहाँ से लाऊँ।
अब भी जकड़ी बंधन में, मैं,.. कैसे बाहर आऊँ।

माना है बदला पहनावा, बदली भाषा शैली,
लेकिन मन की गंगा निश दिन, है मैली की मैली,
स्वच्छ भाव जो गीत रचें, वो भाव कहाँ से पाऊँ,..
नवगीत मांगते नव्यबोध, वो बोध कहाँ से लाऊँ।
अब भी जकड़ी बंधन में, मैं,.. कैसे बाहर आऊँ।

नई सोच का राग अलापें, दुनिया में नर नारी,
पर पीछे हट जाते अक्सर, बदलावों की बारी,
सोच नहीं बदले जब तक, कैसे नवगीत सुनाऊं,..
नवगीत मांगते नव्यबोध, वो बोध कहाँ से लाऊँ।
अब भी जकड़ी बंधन में, मैं,.. कैसे बाहर आऊँ।

बदल जाएँ पहनावे पर, माहौल नहीं है बदलता,
नर नारी का भेद हमेशा, संग साथ ही चलता,
बेटी को फिर किस मुख से मैं, सीख नई समझाऊँ,..
नवगीत मांगते नव्यबोध, वो बोध कहाँ से लाऊँ।
अब भी जकड़ी बंधन में, मैं,.. कैसे बाहर आऊँ।

****

मैं प्रीत के गीत का हूँ अन्तरा

मैं प्रीत के गीत का हूँ अन्तरा, जीवंत हूँ स्वप्न से हराभरा,...!

माना चुनी है मैंने राहें कठिन
मुश्किलों में कट रहे हैं पलछिन
है दिल मेरा हौसले से भरा
मैं प्रीत के गीत का हूँ अन्तरा, जीवंत हूँ स्वप्न से हराभरा,...!

नफरतों को छोड़कर आगे बढ़ी
धीरे-धीरे ही सही पर्वत चढ़ी
वो जिसका शिखर है हिम भरा
मैं प्रीत के गीत का हूँ अन्तरा, जीवंत हूँ स्वप्न से हराभरा,...!

पीर को अब तो पिघलना चाहिए
हिम शिखर को भी तो गलना चाहिए
मेरा समर्पण पूर्ण है, प्रीत से भरा
मैं प्रीत के गीत का हूँ अन्तरा, जीवंत हूँ स्वप्न से हराभरा,...!

राष्ट्रहित जीवन समर्पण लक्ष्य है
'राष्ट्र जागरण धर्म हमारा' कथ्य है
कथनी-करनी एक हो देना दुआ
मैं प्रीत के गीत का हूँ अन्तरा, जीवंत हूँ स्वप्न से हराभरा,...!

****

एकाकी

खुद को एकाकी पाया है, जीवन के हर मोड़ पर,..
अब विश्वास लगा डोलने, रिश्तों के गठजोड़ पर,..

दुनिया में अब भी नेकी है
मैंने दुनिया देखी है
लेकिन अनुभव की परिपाटी
पहुंची न इस निचोड़ पर
अब विश्वास लगा डोलने, रिश्तों के गठजोड़ पर,..
खुद को एकाकी पाया है, जीवन के हर मोड़ पर,..

मन में आशाओं को मैंने
दीपक बनकर पाला है
जलकर जग को दिया उजाला
बस अपने तल को छोड़कर
अब विश्वास लगा डोलने, रिश्तों के गठजोड़ पर,..
खुद को एकाकी पाया है, जीवन के हर मोड़ पर,..

देह न तजती सांसे तब तक
कर्तव्यनिष्ठ ही रहना है
और पलायन भी वर्जित है
सहने की सीमा तोड़ कर
अब विश्वास लगा डोलने, रिश्तों के गठजोड़ पर,..
खुद को एकाकी पाया है, जीवन के हर मोड़ पर,..!

****

ये आंखें बोल जाती है

अगर मैं न भी बोलूँ तो, ये आंखें बोल जाती है।
छुपाऊं लाख मैं तुमसे, ये पलकें भीग जाती है।

दो पल भी जो हो ओझल
मेरी आँखों की सीमा से,
तड़प उठता है मन मेरा
एक अनजानी पीड़ा से,
तुम्हें अब क्या मैं समझाऊं, तुम्हीं में जान बसती है,
तुम्हीं से ख़्वाब सजते हैं, तुम्हीं संग नींद आती है,...!

तुम्हारे साथ जीना है
तुम्हारे साथ ही मरना
तुम्हीं से जिंदगी मेरी
तुम्ही से है खुशी सारी
लगा लो तुम गले से तो, सभी डर भाग जाते हैं
सिमटकर तुम्हारी बाहों में, मेरी दुनिया समाती है,..!

कभी न छोड़ना तुम साथ
मेरे मेहंदी रचे ये हाथ
तुम्हीं ताकत हो अब मेरी
मगर तुम्हीं हो कमजोरी
तुम्हीं संग चैन मिलता है, तुम्ही से मन भी मिलता है
तुम्ही से दिल धड़कता है, तुम्ही से सांस आती है,..!
अगर मैं न भी बोलूँ तो, ये आंखें बोल जाती है।
छुपाऊं लाख मैं तुमसे, ये पलकें भीग जाती है।

****

अपने दर्द सारे

अपने दर्द सारे दर्द से ही काट लेती हूँ
और हर खुशी अपनों में ही बाँट लेती हूँ

जीने के बहाने यूँ सबको नहीं मिलते
खुशियों के फूल भी यूँहीं नहीं खिलते
बुरे पल छोड़कर मैं अच्छे छाँट लेती हूँ
अपने दर्द सारे दर्द से ही काट लेती हूँ
और हर खुशी अपनों में ही बाँट लेती हूँ

कौन कहता है समय सुनता नहीं बातें
सोचकर देखो दिल से कैसे हो दिन रातें
ख्वाहिशों को भी बच्चों सा डाँट लेती हूँ
अपने दर्द सारे दर्द से ही काट लेती हूँ
और हर खुशी अपनों में ही बाँट लेती हूँ

उबड़ खाबड़ हैं जिंदगी के रास्ते तो क्या
संघर्ष बहुत है मंजिलों के वास्ते तो क्या
हौसलों से राहों के गड्ढे पाट लेती हूं
अपने दर्द सारे दर्द से ही काट लेती हूँ
और हर खुशी अपनों में ही बाँट लेती हूँ

ऐसा नहीं कि मुझे कोई डर नहीं लगता
लिपट कर रो लूँ कभी ये मन नहीं करता
पर तब आँखों में छुपा बरसात लेती हूं
अपने दर्द सारे दर्द से ही काट लेती हूँ
और हर खुशी अपनों में ही बाँट लेती हूँ

****

अम्बर की अलगनी

अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,

बहुत बेचैन सा मन है ज़रा तुम पास आओ न,
सिरहाने बैठकर मेरा माथा सहलाओ न,
बच्चों सा मचलकर मन ने प्यार मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,

हाथों में हाथ लेकर, मुझे कुछ तो समझाओ
डर रहा है मेरा मन, बातों में बहलाओ
कोई शक नहीं पर दिल ने इज़हार मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,

देखकर जमाने के चलन घबराती हूँ
भीड़ में भी खुद को मैं अकेला पाती हूँ
अकेलेपन के रोग का उपचार मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,

जानती हूँ बिन लड़े न, मैं हार मानूँगी
हूँ ज़रा जिद्दी, गढ़ सारे जीत ही लूँगी
पर तुम्हारे सुख-दुख में भी हिस्सा मांगा है
अम्बर की अलगनी पर, एक ख्वाब टांगा है,
अपने हर कदम पर, तुम्हारा साथ मांगा है,

****

कर ज़रा सा सब्र मेरे मन

अंतर्मन की पीड़ा सबको, शब्दों में कैसे समझाऊँ?
मन को ही समझाती हूँ,, कर ज़रा सा सब्र मेरे मन।

कब तक पीड़ा सहूँ अकेली
कब तक ज़ख्मों को सहलाऊँ
सूख नहीं पाते हैं ज़ख्म
पीड़ा भी है और दुख भी
अपनों ने जो दिये है दर्द, गैरों को कैसे बतलाऊँ,
मन को ही समझाती हूँ, कर ज़रा सा सब्र मेरे मन।

समय-समय की बात है
कल हँसी थी आज रोई
पल-पल के परिवर्तन को
समझ नहीं पाता हर कोई
मन भी ऋतुओं से बदले है, ऋतुओं पर कैसे जोर चलाऊँ,
मन को ही समझाती हूँ, कर ज़रा सा सब्र मेरे मन।

आज बुरा है कल होगा अच्छा
यदि मेरा प्रयास है सच्चा
किसी को मैंने चोट नहीं दी
किसी को न हानि पहुँचाई
रात नहीं रहती न अँधियारा, मन में आस के दीप जलाऊँ
मन को ही समझाती हूँ, कर ज़रा सा सब्र मेरे मन।

****

लिखते हैं, मिटाते हैं!

दिल में कई-कई बाते हैं, मुश्किल से जिसे छुपाते हैं...!

दर्द भी होता है थोड़ा, थोड़ी टीस भी होती है,
लेकिन हल इस मुश्किल का, है मौन सही हम पाते हैं,
दिल में कई-कई बाते हैं, मुश्किल से जिसे छुपाते हैं,..!

जब तक धीरज रख सकते हैं, तब तक तो हँस लेते हैं,
जब सब्र नहीं कर पाते तब, ऑसू ही काम आते हैं,
दिल में कई-कई बाते हैं, मुश्किल से जिसे छुपाते हैं,..!

खैर छोड़ो, सब जाने दो, समझ नहीं तुम पाओगे,
तुमको जो सुनना भाता है, चलो वही कहते सुनाते हैं,
दिल में कई-कई बाते हैं, मुश्किल से जिसे छुपाते हैं,..!

सहना ही होता है सबको, खुद ही दर्द खुद के हिस्से का,
तुमसे कोई गिला नहीं है, यूँ ही लिखते हैं-मिटाते हैं,
दिल में कई-कई बाते हैं, मुश्किल से जिसे छुपाते हैं,..!

****

अरमान अधूरे रह गए

अरमान अधूरे रह गए, सपने तो सपने रह गए।

गुड़िया मैं बाबुल की रही,
पीड़ा न कभी कोई सही।
कलियों सी नाजुक रही,
बात यही बाबुल ने कही।
सब बचपन में ही रह गए, सपने तो सपने रह गए।

नानी की परियों की कथा,
दादी के पुरखों की प्रथा।
बाबुल की खुशियों का हिस्सा,
मां की ममता वाला गुस्सा।
अब शेष किस्से ही रह गए, सपने तो सपने रह गए।

बाबुल के घर में बचपना,
मां के आंचल में दुबकना।
भाई से लड़ना झगड़ना,
सखियों संग बनना संवरना।
सब यादों में ही रह गए, सपने तो सपने रह गए।

रोका पर वो ठहरा नहीं,
फिर से बचपन लौटा नहीं।
लांघी बाबुल की देहरी,
लेकर आशाएं सुनहरी।
बंधनो में बंधकर रह गए, सपने तो सपने रह गए।

****

क्या आदमी इतना बड़ा होगा?

दर्द सामने जब भी खड़ा होगा,
नाजुक सही ये दिल कड़ा होगा।

यूँ लाख सबसे ही छुपाया हो,
पर आंख में आँसू गड़ा होगा।
खामोश रहकर सुन लिया जो वो,
आरोप माथे पर जड़ा होगा।

जब घाव भी नोंचे गये होंगे,
अरमां कहीं बिखरा पड़ा होगा।
बेजान तन हो भी गया हो पर,
ये मन मस्तिष्क से तो लड़ा होगा।

आये खुशी की याद भी चाहे,
नासूर बन ज़ख्म भी सड़ा होगा।
दर्द भूल अपना प्रीत ही बांटे,
क्या आदमी इतना बड़ा होगा?

****

तुमको देखे हुए

तुमको देखे हुए आज इक अरसा हुआ
मन का मौसम भी है आज तरसा हुआ
भीगी-भीगी पलकों ने बताया अभी
आंखों का सावन भी है बरसा हुआ

हो सके तो मिल लो आकर मुझसे
कहीं खो न जाऊँ तुमको भुलाकर
आज मन मेरा है बहुत भड़का हुआ
तुमको देखे हुए आज इक अरसा हुआ

दर्द है बहुत और कमजोर हूँ मैं
संभालूं मैं खुद को ये मुमकिन नहीं
दिल में तुम हो पर दिल टूटा हुआ
तुमको देखे हुए आज इक अरसा हुआ

हूँ बहुत मैं विकल और लाचार सी
बातें किताबी नहीं है ये व्यवहार की
करती हूँ महसूस खुद को लूटा हुआ
तुमको देखे हुए आज इक अरसा हुआ

माना गढ़ा है तुमको बस कल्पनाओं से
पर सुनो! तुम जुड़े हो भावनाओं से
आज है मन मेरा जिद पर अड़ा हुआ
तुमको देखे हुए आज इक अरसा हुआ

मन का मौसम भी है आज तरसा हुआ
भीगी-भीगी पलकों ने बताया अभी
आंखों का सावन भी है बरसा हुआ।

****

पीपल सुन रे!

पीपल सुन रे!
पत्ते तेरे शोर मचाते है, वो जब आते हैं,..!
प्यार हमारा पहला-पहला, हम डर जाते हैं,..!

सूने पनघट पर देख रहे हैं
रस्ता अपने साजन का,
ये तनहाई उसपर मन में
डेरा उनकी ही यादों का ,
जिद पर उनकी इक तो उनसे मिलने आते है,..
प्यार हमारा पहला-पहला, हम डर जाते हैं,..
पीपल सुन रे!
पत्ते तेरे शोर मचाते है, वो जब आते हैं,..!

छुप छुप कर सखियों से अपनी
मिलने आना यूं प्रियतम से,
तुमको क्या मालूम नहीं है
प्रेम छुपाना व्याकुल मनसे,
है कितना मुश्किल ये लेकिन हम कर जाते हैं,..
प्यार हमारा पहला-पहला, हम डर जाते हैं,..
पीपल सुन रे!

पत्ते तेरे शोर मचाते है, वो जब आते हैं,..!

चोरी-चोरी प्रीत निभाना
हाल जिया का रोज छुपाना,
ये आदत हममे न कभी थी
बात बात में बात बनाना,
लेकिन प्रेमरोग में हम ये सब कर जाते हैं,...
प्यार हमारा पहला-पहला, हम डर जाते हैं,..
पीपल सुन रे!
पत्ते तेरे शोर मचाते है, वो जब आते हैं,..!

तेरे पीछे छुपकर अपने
प्रिय को कितना तड़पाते हैं,
तेरे साये में हम बैठे
कितने सपने बुन जाते हैं,
तू देगा मौन गवाही यकीन कर जाते हैं,...
प्यार हमारा पहला-पहला, हम डर जाते हैं,..
पीपल सुन रे!
पत्ते तेरे शोर मचाते है, वो जब आते हैं,..!

****

किसे पुकारें आज हम

खुद में ही सिमट गए, स्वीकार नसीब के लिखे,
किसे पुकारें आज हम, सभी दुखी दुखी दिखे,

भीगी है पलकें, मन भी उदास है,
मेरे दर्द की दवा, न किसी के पास है,
दर्द भी बताएं किसे, सभी तो दर्द में दिखे,
किसे पुकारें आज हम, सभी दुखी दुखी दिखे,..!

आस टूटने लगी, मिटे खुशी के लेखे,
अकेलापन साथ है, आसपास जब देखे,
लेखे जोखे किये कर्म के, पुण्य से अधिक पाप दिखे,
किसे पुकारें आज हम, सभी दुखी दुखी दिखे,..!

दोष किसी का नहीं, समय ही कुछ अजीब है,
सब कुछ है जिसके पास, आज वो भी गरीब है
दूरियाँ मनों में बहुत थी, जो ज्यादा पास-पास दिखे
किसे पुकारें आज हम, सभी दुखी दुखी दिखे,..!

खुद में ही सिमट गए, स्वीकार नसीब के लिखे,
किसे पुकारें आज हम, सभी दुखी दुखी दिखे।

****

मुझमें तू बसता है आधा

मुझमें तू बसता है आधा, क्या तू कान्हा है मैं हूँ राधा?
तू मुझको लगता है शिव सा, मैं बनूँ सती यह मेरा इरादा।

संघर्ष ही मिले कदम-कदम पर
कट गया जीवन यूँ ही आधा
दुख कब तक सहने है बोल
क्या है बता सुख की मर्यादा
तू मुझको लगता है शिव सा, मैं बनूँ सती यह मेरा इरादा!

प्रेम ही जीवन धन अनमोल
पर जीवन है सीधा-सादा
मिलना बस तुझ पर निर्भर था
फिर क्यों दी पग-पग पर बाधा
मुझमें तू बसता है आधा, क्या तू कान्हा है मैं हूँ राधा?

चल जाने दे जो भी नियति हो
प्रीत निभाने का कर वादा
साथ ही रहना जैसे भी हो
चाहे तू शिव हो या कान्हा
प्रेम कसौटी पर उतरे खरा, मैं लगूं सती सी या फिर राधा।

मुझमें तू बसता है आधा, क्या तू कान्हा है मैं हूँ राधा?
तू मुझको लगता है शिव सा, मैं बनूँ सती यह मेरा इरादा।

****

तबियत खराब सी है, खुशी नाराज़ सी है

तबियत खराब सी है, खुशी नाराज़ सी है।

मन भी है विचलित सा
धड़कन है बेलगाम
आँखों में आँसू है
मैं खुद हूँ बेजुबान
इंतजार तुम्हारा मुझे तो आज भी है,
तबियत खराब सी है, खुशी नाराज़ सी है।

रुठे हुए हैं नाते
जीवन बीता जाए
कोई पल चैन भरा
पल भर को तो आए
हसरत दिल की हरदम, बस बयां आज की है,
तबियत खराब सी है, खुशी नाराज़ सी है।

खयाल रखती हूँ पर
बदलता हुआ मौसम
बदलते हुए अपने
सपनों का मातम
ये लगता है मानो कयामत आज ही है,
तबियत खराब सी है, खुशी नाराज़ सी है।

****

राम का मंदिर

धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।
शिलान्यास के शुभमुहूर्त का अनुमोदन जन-जन कर रहा आज,
रघुपति राघव राजा राम, बसे हर पतित पावन में।

सैकड़ों वर्ष अनगिनत मन तरसे, राम लला की किरपा बरसे,
तरस रही थी पावन भूमि, अपने भगवान को पाने को,
धन्य हुई है यह युग यह पीढ़ी, दिन आया यह जीवन मे,
धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।

वर्ष 20 संकट का काल है, जनजीवन यूँ भी बदहाल है,
कण कण विश्व का डूब रहा, नैराश्य भाव के बंधन में,
आज लग रहा स्वयं राम, लाएंगे सुख शान्ति जीवन में।
धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।

हर्षित आज वह पुण्यभूमि है, प्रमुदित पूरा भारत है
हर गली में जयकारा राम का, हर मन में राम का स्वागत है
राम नाम मेंरमकर देखो, मिलता है पुण्य अनुमोदन में।
धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।
शिलान्यास के शुभमुहूर्त का अनुमोदन जन-जन कर रहा आज,
रघुपति राघव राजा राम, बसे हर पतित पावन में।

****

नहीं जाते

चाहतें, कर्तव्य और सपने यूँही छोड़े नहीं जाते।
बहाव भावों की नदियों के यूँही मोड़े नहीं जाते।।
मेरे कुछ ख्वाब है ऐसे, मंजिल दूर है जिनकी,
मगर जो चल पड़े इक बार, सफर छोड़े नहीं जाते।

मन बेचैन सा फिरता, है जाने सोचता क्या-क्या,
पहुंचता है वहाँ भी ये, जहाँ घोड़े नहीं जाते।
बड़ा है बावरा ये मन, कुछ सुनता नहीं मेरी,
समझता ही नहीं नाते, सबसे जोड़े नहीं जाते।
चाहतें, कर्तव्य और सपने यूँही छोड़े नहीं जाते।
बहाव भावों की नदियों के यूँही मोड़े नहीं जाते।।

बताती हूँ इसे हर बार, ये हरदम भूल जाता है
मन से मन के हो जो रिश्ते, वो यूँही तोड़े नहीं जाते।
जो अपने हैं रहेंगे साथ, जो नहीं अपने वो जाएंगे,
अधिकतर छोड़ जाते है, मगर थोड़े नहीं जाते।
चाहतें, कर्तव्य और सपने यूँही छोड़े नहीं जाते।
बहाव भावों की नदियों के यूँही मोड़े नहीं जाते।।

जो जाते हैं वो दे जाते हैं, गहरे घाव कुछ हमको,
दर्द होता है जिनमें पर, वो फोड़े नहीं जाते।
बनाया है इस मन को, प्रीत कुदरत ने कुछ ऐसा,
समय करता है जब निर्णय, तो मुँह मोड़े नहीं जाते।
चाहतें, कर्तव्य और सपने यूँही छोड़े नहीं जाते।
बहाव भावों की नदियों के यूँही मोड़े नहीं जाते।।

****

अच्छा लगता है

मुझको तुम संग वक्त बिताना अच्छा लगता है,
ख्यालों में तुम्हारा आना-जाना अच्छा लगता है।

जाने क्यों चुप-चुप रहते हो
आँखों से ही सब कुछ कहते हो
यूँ खमोशी से बतियाना अच्छा लगता है
मुझको तुम संग वक्त बिताना अच्छा लगता है,
ख्यालों में तुम्हारा आना-जाना अच्छा लगता है।

मेरा मन है तुम्हारा बसेरा
तुम संग ही रातें, तुम से ही सबेरा
तुमको यूँ ही पल-पल जीना अच्छा लगता है
मुझको तुम संग वक्त बिताना अच्छा लगता है,
ख्यालों में तुम्हारा आना-जाना अच्छा लगता है।

ये प्रेम रूहानी, रूह से नाता
कसमें-वादों का भी है खाता
हर लम्हे का हिसाब लगाना अच्छा लगता है
मुझको तुम संग वक्त बिताना अच्छा लगता है,
ख्यालों में तुम्हारा आना-जाना अच्छा लगता है।

तुम हर सुख-दुख का हिस्सा
प्रेम तुम्ही से, तुम पर ही गुस्सा
नाहक तुम पर हक़ जतलाना अच्छा लगता है
मुझको तुम संग वक्त बिताना अच्छा लगता है,
ख्यालों में तुम्हारा आना-जाना अच्छा लगता है।

सुनो! कभी तो सच हो जाना
अचानक ही मेरे सामने आना
सपनो का ऐसे सच हो जाना अच्छा लगता है
मुझको तुम संग वक्त बिताना अच्छा लगता है,
ख्यालों में तुम्हारा आना-जाना अच्छा लगता है।

****

चिंताएँ ही शेष रही

पीड़ा टिप-टिप बरस रही है, मुझसे जो न सही गई।
चिंतन वाले मन में देखो, चिंताएँ ही शेष रही।

चुप-चुप सी मैं रहने लगी हूँ,
व्यर्थ निराशा में बहने लगी हूँ,
वो भी अब सब जान गए हैं
बात जो अब तक कही न गई,
पीड़ा टिप-टिप बरस रही है, मुझसे जो न सही गई।
चिंतन वाले मन में देखो, चिंताएँ ही शेष रही।

खामोशी को सुनने लगी हूँ,
खामोशी से कहने लगी हूँ,
प्यार, भरोसा, उम्मीदों की
सब आदतें मानों छूट गई,
पीड़ा टिप-टिप बरस रही है, मुझसे जो न सही गई।
चिंतन वाले मन में देखो, चिंताएँ ही शेष रही।

सपने भी अब ढहने लगे हैं
दुख स्थायी रहने लगे हैं
लड़कर कोई अधिकार मिला कब
ये बात भी अब मैं समझ गई,
पीड़ा टिप-टिप बरस रही है, मुझसे जो न सही गई।
चिंतन वाले मन में देखो, चिंताएँ ही शेष रही।

दूसरों के लिए लड़ जाती थी जो,
सही गलत सब सहने लगी हूँ,
मैं जो थी अब मैं वो नहीं हूँ
मैं कैसे-क्यूँ इतना बदल गई,
पीड़ा टिप-टिप बरस रही है, मुझसे जो न सही गई।
चिंतन वाले मन में देखो, चिंताएँ ही शेष रही।

****

अमवा की छांव में

चल साथी चलकर बैठेंगे उस , अमवा की छांव में,..
चल थोड़ा जीकर आते हैं, हम यादों के गांव में,..

कैसे तुम मिलने आए थे,
शादी का करके इरादा,..
वो पल जब करके गए थे,
तुम जल्दी आने का वादा,..
वो मस्तियां वो शोर शराबा,
हमारी शादी के चाव में,..
चल थोड़ा जीकर आते हैं हम यादों के गांव में,..
चल साथी चलकर बैठेंगे उस अमवा की छांव में,..

वो शादी के बाद हमारे,
सुंदर सपनों का घर सजना,..
फिर नन्ही नन्ही खुशियां,
और उम्मीदों का गोद में पलना,..
साथ साथ चलना दोनों का,
हर सुख दुख के दांव में,..
चल थोड़ा जीकर आते हैं हम यादों के गांव में
चल साथी चलकर बैठेंगे उस अमवा की छांव में,..

हंसते-रोते,लड़ते-झगड़ते,
नोकझोंक करते करते,..
बीत गए हैं सत्रह बरस,
बातियां वतियां करते करते,..
लगता है संग बैठे थे जैसे,
कल ही जीवन की नाव में,..
चल थोड़ा जीकर आते हैं हम यादों के गांव में,..
चल साथी चलकर बैठेंगे उस अमवा की छांव में,...

आज मुझे लगता है जैसे,
तुम बिन सब कुछ सूना है,..
साथ तेरे चलना है हरदम,
साथ तेरे ही जीना है,..
बस गए हैं फूलों में खुशबू से,
हम एक दूजे के स्वभाव में,..
चल थोड़ा जीकर आते हैं हम यादों के गांव में,
चल साथी चलकर बैठेंगे उस अमवा की छांव में,..,..

****

गोकुल-वृंदावन-बरसाना-मथुरा

न तो मैं बरसाने की राधा,न है तू मथुरा का वासी।
न यमुना के तीर बसे हम, वृंदावन या गोकुल के वासी।।

प्रेम है राधाकृष्ण सरीखा, और समर्पण भी मीरा सा,
हौले हौले पीना है जिसको,वो विरह वेदना लगे गरल सी।
न तो मैं बरसाने की राधा, न है तू मथुरा का वासी।

हर गोपी के पास है कान्हा, जिसको अपना जीवन माना,
फिर भी हंसकर रास रचाती सुख ये भी तो है आभासी।
न तो मैं बरसाने की राधा, न है तू मथुरा का वासी।

मैंने भी स्वीकार किया अब, तुझमें ही ये मन रमता है,
क्या करना अब तीरथ सारे, तुझमें मथुरा वृंदावन काशी।
न तो मैं बरसाने की राधा, न है तू मथुरा का वासी।

गोपियाँ मीरा राधा सबने, प्रेम आस्था और भक्ति की,
अमरप्रेम के अमिट उदाहरण, बने समर्पण के परिभाषी।
न तो मैं बरसाने की राधा, न है तू मथुरा का वासी।

बस इतना ही स्वप्न संजोया, ये मन तेरी ख़ातिर रोया,
तू पाए खुशियां जीवनभर, प्रेम मेरा हो तभी अविनाशी।
न तो मैं बरसाने की राधा, न है तू मथुरा का वासी।
न यमुना के तीर बसे हम, वृंदावन या गोकुल के वासी।।

****

पैरों की पायल

पैरों की पायल नही छनकती, जाने कब से,..
हाथों की चूड़ी नहीं खनकती, जाने कब से,..

मन पर बोझ मनो का धरा है
जाने कितना क्या क्या सहा है
मन की मैना भी नही फुदकती, जाने कब से,..
पैरों की पायल नही छनकती, जाने कब से,..

रंग नहीं सजते फबते हैं
रूप कुरूप सदा ही रहा है
गुण की गागर भी नही छलकती, जाने कब से,...
पैरों की पायल नही छनकती, जाने कब से,..

आँगन पर आते हैं बादल
घन घन रोज गरज कर जाते हैं
अंतस की बदली भी नहीं बरसती, जाने कब से,..
पैरों की पायल नही छनकती, जाने कब से,..

हाँ! कुछ याद जरूर आता है
रुठ के मन का मीत गया है
सुख की बेला भी नही सुहाती, हाँ बस तब से,...
पैरों की पायल नही छनकती, जाने कब से,..
हाथों की चूड़ी नहीं खनकती, जाने कब से,..

****

मन आँगन

फिर से आज भिगोया है, मन आँगन को खुशियों में!
ढूंढ के लाई बिखरे-बिखरे, जो भी पल थे सुधियों में!!

कितना व्यर्थ बिताया जीवन, अर्थ न खुद को मिल पाया,
खुद ही खुद को स्वप्न दिखाए, खुद ही खुद को भरमाया,
आज किया है तत्पर खुद को, कुछ सत्य सजाए नयनों में,
फिर से आज भिगोया है, मन आँगन को खुशियों में!
ढूंढ के लाई बिखरे-बिखरे, जो भी पल थे सुधियों में!!

जो बुरा था और मिट सकता था, अश्कों से सब धो डाला,
भ्रम के जाले झाड़ दिए सब, कुविचारों को मन से निकाला,
आज सजाया है फिर घर को, न देना है किसी को किराए में,
फिर से आज भिगोया है, मन आँगन को खुशियों में!
ढूंढ के लाई बिखरे-बिखरे, जो भी पल थे सुधियों में!!

घर जब खुद का अपना है, और अपनों का सपना है,
फिर दखल क्यों गैरों का, रखेंगे जैसे भी रखना है,
अपना जीवन अपनों से है, न आना है लगाए-बुझाए में,
फिर से आज भिगोया है, मन आँगन को खुशियों में!
ढूंढ के लाई बिखरे-बिखरे, जो भी पल थे सुधियों में!!

****

अच्छे दिन खुद क्यूं नहीं लाते

गम पीते हैं गम ही खाते,
फिर भी गीत खुशी के गाते,...

पीड़ा की परवाह नहीं है,
दूजी कोई राह नहीं है,
जो जितना आगे जाता है,
वो उतनी ठोकर खाता है,
देखा है ऊंचे पर्वत पर, सबसे गहरे बादल छाते,
फिर भी गीत खुशी के गाते, गम पीते हैं गम ही खाते,...

बारिश में घर मिट्टी के सारे,
मिटटी में मिल जाते हैं,
बेघर वो मजदूर ही हों जो,
ऊंचे ऊंचे महल बनाते हैं,
पर भाग्य का लेखा लेकर वो, कर्महीन तो नहीं हो जाते,
फिर भी गीत खुशी के गाते, गम पीते हैं गम ही खाते,...

हर रिश्ता है मलतब से ही,
कुछ न गलत है कुछ न सही,
जो व्यवहारिक बन ज्ञान पिलाते,
वही बात बात पर स्वार्थ भुनाते,
फिर देते हैं प्रेम दुहाई, रह गए बस हैं ऐसे ही नाते,
फिर भी गीत खुशी के गाते, गम पीते हैं गम ही खाते,...

सजे घरों में बसी कृत्रिमता,
अपनापन गैरों को दिखता,
अपने दो पल को हैं तरसते,
एहसास हुए हैं कितने सस्ते,
जो कर देते खुद का समर्पण, बदले में प्रीत न उतनी पाते,
फिर भी गीत खुशी के गाते, गम पीते हैं गम ही खाते,...

मीठी बातों का होता है असर,
चाहे हो वो धीमा सा जहर,
आंसू का अब कोई मोल नहीं ,
भावों का भी तोल नहीं,
जो भावों में जीते है अब भी, दुनिया को वो नही सुहाते,
फिर भी गीत खुशी के गाते, गम पीते हैं गम ही खाते,....

आस नहीं छोड़ी है हमने,
वादा हमसे किया था तुमने,
एक दिन ये सब फिर बदलेगा,
जिसका जो हक़ है वो मिलेगा,
जिसके तुम सपने दिखलाते, अच्छे दिन खुद क्यूं नहीं लाते,
फिर भी गीत खुशी के गाते, गम पीते हैं गम ही खाते,...!

****

धूप का टुकड़ा

धूप का टुकड़ा चुराकर देहरी पे रख आई
छत पे जाके रात से चाँदनी चुरा लाई,....!

खुश हूँ मैं कि प्रकृति है आज दामन में
बीज अमन के बोऊंगी मैं अपने चमन में
लगेगा वक्त जानती हूँ फूल खिलने में
पर यकीन है एक दिन फूटेगी अमराई,
धूप का टुकड़ा चुराकर देहरी पे रख आई
छत पे जाके रात से चाँदनी चुरा लाई,..!

घर के परकोटे हैं ऊँचे डर है चोरों का
मर रही इंसानियत का है शोर जोरों का
हरियाली सत्य की मैं पग-पग उगाऊंगी
अपने आँगन की प्रेम से कर ली सिंचाई
धूप का टुकड़ा चुराकर देहरी पे रख आई
छत पे जाके रात से चाँदनी चुरा लाई,...!

हो बेटियों के मान और सम्मान की रक्षा
और बेटों को भी दूँ संस्कार और शिक्षा
दोनों जब होंगे बराबर जग संतुलित होगा
पढ़ाने जग को ये पाठ मैंने भी की पढ़ाई
धूप का टुकड़ा चुराकर देहरी पे रख आई
छत पे जाके रात से चाँदनी चुरा लाई,...!

चाहत है देश में हो सुख-शांति का बसेरा
फिर से आए सोने की चिड़िया वाला सबेरा

घर, गली, पगडंडियाँ, गाँव, शहर सुरक्षित
नियमों के पालन में हो और थोड़ी कड़ाई
धूप का टुकड़ा चुराकर देहरी पे रख आई
छत पे जाके रात से चाँदनी चुरा लाई,...!

विश्वगुरु फिर बने भारत चाहूँ ये आशीष
शहादत को नमन करते हम झुकाकर शीश
सैनिकों के भी घर रहें आबाद हमेशा
न हो कभी सरहदों पर भी कोई लड़ाई
धूप का टुकड़ा चुराकर देहरी पे रख आई
छत पे जाके रात से चाँदनी चुरा लाई,...!

गुनगुनी बहती हवा और बारिश की कुछ बूंदे,
संदूक में रख ली है मैंने अब कहाँ तन्हाई,...!

****

मन करता मनमानी, बात मेरी न मानी

खुशियाँ थी चहुओर
शान्ति से आवरित,
सूरज के जाते ही
आसमान मन हुआ धानी।
मन करता मनमानी, बात मेरी न मानी।

दूर क्षितिज में
खिलता है इंद्रधनुष
मन में तुम्हारी याद
आंखों में निदिया रानी।
मन करता मनमानी, बात मेरी न मानी।

रात आई, सितारे चमचमाए
पर जीवन मानो ठहर गया
सूरज के आते ही फिर
स्वप्न ने पूर्णता की ठानी
मन करता मनमानी, बात मेरी न मानी।

****

अब तक प्रकाशित पुस्तकें..

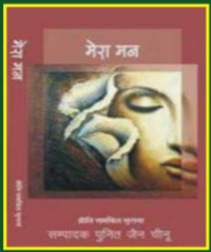

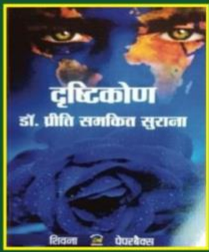

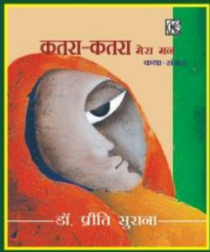

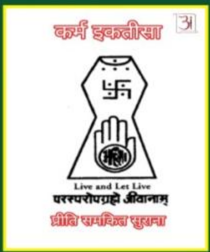

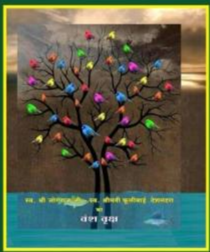

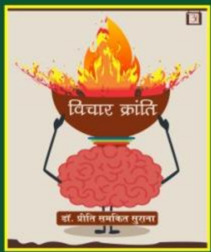

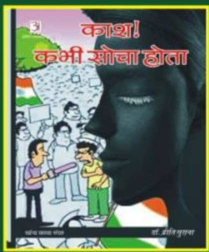

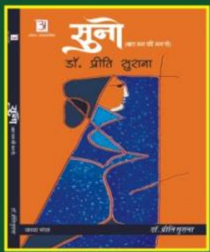

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो. – 9424765259, ईमेल – antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-239-5

मूल्य 250/–